वर्ष 42 अंक 7 जुलाई 2015

₹15/-

हँसती दुनिया

बच्चों !
तुम्हें मेरा नया रूप
पसंद आया होगा।

हँसती दुनिया

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

वर्ष 42 अंक 7 जुलाई 2015 पृष्ठ 52

स्तम्भ

सबसे पहले 4
अनमोल वचन 5
हँसती दुनिया समाचार 17
कभी न भूलो 20
भैया से पूछो 36
पढ़ो और हँसो 42
रंग भरो परिणाम 44
वर्ग पहेली 48
आपके पत्र मिले 49

चित्रकथाएं

माईक्रोस्कोप 12
चिंकी और सी–हौर्स 39

सम्पादक
विमलेश आहूजा
सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

नन्हीं और नानी — डॉ. बानो सरताज 7
छोटों पर भरोसा — अर्पित सक्सैना 16
दृढ़ निश्चय — डॉ. दर्शन सिंह आशट 21
चाँदी के बर्तन — नेहा नागपाल 26
सजग महात्मा — दिनेश राय 30
दो सहेलियां — किशोर डैनियल 34

कविताएं

आओ बादल जी — रामसेवक शर्मा 6
इन्द्रधनुषी छटा सुहानी — गफूर 'स्नेही' 11
बरसात का मौसम — रामअवध राम 19
दो बाल कविताएं — महेन्द्र सिंह शेखावत 27
मेरी बगिया में — श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 35
आओ बादल — अनिल द्विवेदी 38
आई वर्षा — डॉ. रामनिवास 'मानव' 41
बादल आये — डॉ. हरीश निगम 41
खुल गये स्कूल — राजकुमार जैन 'राजन' 47

विशेष/लेख

कभी देखा है ऐसा पेड़ — मिताली जैन 14
पहेलियां — राधा नाचीज़ 25
रोचक इतिहास है गुब्बारे का... — सुप्रिया 28
सामान्यज्ञान प्रश्नोत्तरी — विकास अरोड़ा 32
गुणों से भरपूर : मूंग और मूंग की दाल — परिधि जैन 33

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	5 YEARS	10 YEARS	20 YEARS
INDIA/NEPAL	Rs. 150	—	Rs. 700	—	—
UK	£ 15	—	£ 80	—	—
EUROPE	€ 20	—	€ 100	—	—
USA	$ 25	—	$ 120	—	—
CANADA/AUSTRALIA	$ 30	—	$ 140	—	—

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रभारी पत्रिका विभाग : सी. एल. गुलाटी

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

लक्ष्य हमारा - हँसता जीवन

संसार में सबकुछ परिवर्तनशील है अर्थात् कुछ न कुछ बदलाव हर वस्तु, विषय में होता ही रहता है, हम सब भी इससे अछूते नहीं हैं। फिर भी इन सबमें कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो नहीं बदलती बल्कि उनको धारण करने वाला बदल जाता है। जैसे एक पद होता है उस पद पर एक व्यक्ति नियुक्त होता है। वह अपना कार्य बहुत सहजता, सरलता, तन्मयता के साथ करता है। फिर भी कुछ समय बाद वह व्यक्ति या तो उन्नति पा जाता है, छोड़ कर चला जाता है, उससे वह पद छूट जाता है या रिटायर हो जाता है, परन्तु वह पद जिस पर वह नियुक्त हुआ था उस पद पर किसी और की नियुक्ति हो जाती है, पद नहीं बदलता पदाधिकारी ही बदल जाते हैं।

इसी तरह आप सभी जानते हैं जब हमारी प्यारी हँसती दुनिया हिन्दी का आरम्भ हुआ तो इसके सम्पादक श्री भूपेन्द्र 'बेकल' जी, श्री विनय जोशी जी बने। धीरे–धीरे उन्होंने अपनी पूरी मेहनत, लगन, बुद्धिमत्ता और विवेकपूर्ण कार्यशैली से हँसती दुनिया का संदेश सब तक पहुँचाया। आज सम्पादक का कार्य विमलेश आहूजा निभा रहे हैं। इसी तरह कल कोई और सम्पादक आ जाएगा लेकिन हँसती दुनिया अपनी चाल चलती रहेगी, नहीं बदलेगा तो यह प्रगति का कार्य, नहीं बदलेगा।

हम सभी पहले बच्चे थे, फिर पढ़–लिख कर बड़े हुए, युवावस्था में प्रवेश किया, फिर हमारा परिवार बना, बच्चे हुए, सम्बन्धी बने भी और बिछुड़े भी; फिर और बड़े हुए, प्रौढ़ अवस्था में प्रवेश कर गये इत्यादि... इत्यादि। लेकिन हम वही के वही रहे, मुझ में जो बड़ा हुआ वह हमारा शरीर बड़ा हुआ, बुद्धि और मन विकसित हुआ लेकिन हम सब में वह 'मैं' तो वही का वही रही। केवल "वह मैं" जिसने अपना बचपन देखा, युवावस्था देखी बाकी सभी अवस्थाएँ जीवन में देखीं, वह तो वही की वही रहा। केवल नहीं बदला तो वह जो इन सभी परिवर्तनों को देख रहा था। कद बदला, रूप बदला, रंग बदला, जीने का हर ढंग बदला– परन्तु वह या जिसे कहें 'मैं', वह तो वही का वही रहा।

प्यारे साथियों, जैसे प्रकृति बदलती रहती है, उसका प्रभाव हम सब पर पड़ता रहता है परन्तु प्रकृति भी परमात्मा के आधीन ही होती है, नहीं बदलता तो केवल परम–तत्व, परम–आत्मा, परमात्मा यानि निराकार।

साथियों, अब हँसती दुनिया का आकार (फ्रेम) बदला जा रहा है। रंग बदला जा रहा है, इसमें छपने वाली सामग्री भी बदलती रही है और आगे भी बदलाव आते रहेंगे परन्तु नहीं बदलेगा तो हँसती दुनिया का प्रेरणात्मक संदेश देने का लक्ष्य। जब तक हम सब रहेगें, यह हँसती दुनिया का परिवार सबको सत्य की खुशबू का अहसास करवाने का कार्य करता रहेगा, जिनके नासपुट बन्द हों गए हों, उन्हें खोलने का प्रयास करता रहेगा, अपने सुन्दर गीतों, कविताओं और लेखन–सामग्री से। हमारा लक्ष्य यही रहेगा कि दुनिया का हर प्राणी हमेशा खुश रहे और हँसता रहे, सारा जीवन इसी भाव में रहे। दुनिया का हर प्राणी हमेशा खुश रहे और हँसता रहे, यही हमारा प्रयास है।

–विमलेश आहूजा

अनमोल वचन

– संकलनकर्ता : प्रियंका चोटिया 'आंचल'

★ अपने भविष्य के बारे में आप ज्योतिषियों से अधिक जानते हैं, उसे खुद ही ढूंढ निकालिए।

★ घोड़े का गिरा संभलता है, मगर नजरों का गिरा नहीं।

★ आंसूओं से छलछलाता प्रेम लुभावना होता है।

★ प्रेम हर किसी को जीत लेता है, धूर्त पर विजय केवल प्रेम ही पा सकता है।

★ बुद्धि से विचारकर किए गये कर्म ही श्रेष्ठ होते हैं।

★ अपने घर में सुख और शान्ति का ऐसा वृक्ष लगाएं जिसकी छाया पड़ोसी के घर भी जाए।

★ जो अकेले चलते हैं वे तेजी से बढ़ते हैं।

★ शान्ति बिगाड़ने वाली दो ही वस्तुएं है– राग और द्वेष।

★ सत्य से कीर्ति प्राप्त की जाती है और सहयोग से मित्र बनाएं जाते हैं। – कौटिल्य

★ कामनाएं समुद्र की भाँति है। पूर्ति का प्रयास करने पर उनका कोलाहल और बढ़ जाता है। – स्वामी विवेकानन्द

★ जैसे सूर्य आकाश से छुप नहीं सकता, उसी प्रकार महापुरुष भी संसार में गुप्त नहीं रह सकते। – व्यास

★ शासन का समर्थन करने वाले को जनता पसंद नहीं करती और जनता का पक्ष लेने वाले को शासन। ऐसे लोग दुर्लभ हैं जो दोनों को प्रिय हों। – पंचतंत्र

★ ख्याति नदी की भाँति अपने उद्‌गम स्थल पर क्षीण ही रहती है किन्तु दूर जाकर विस्तृत हो जाती है। – भवभूति

★ जिस प्रकार जल कमल के पत्ते पर नहीं ठहरता है उसी प्रकार मुक्त आत्मा के कर्म उससे नहीं चिपकते हैं।

– छांदोग्य उपनिषद

★ मनुष्य का पतन कार्य की अधिकता से नहीं; बल्कि कार्य की अनियमितता से होता है।

★ क्रोध ऐसी आँधी है जो विवेक को नष्ट कर देती है।

★ सच्ची प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए संपत्ति की जरूरत नहीं, उसके लिए त्याग व सेवा काफी है।

★ जीने के लिए खाना अच्छा है, परन्तु खाने के लिए जीना महापाप है। – प्रेमचंद

बालगीत : रामसेवक शर्मा

आओ बादल जी

घिर–घिर लाओ पानी
आओ बादल जी।
बुला रही है नानी
आओ बादल जी।।

प्यास गले में अटकी
नहीं सहा जाता।
बढ़ती जाती गरमी
मन है अकुलाता।।

तड़पे मछली रानी
आओ बादल जी।

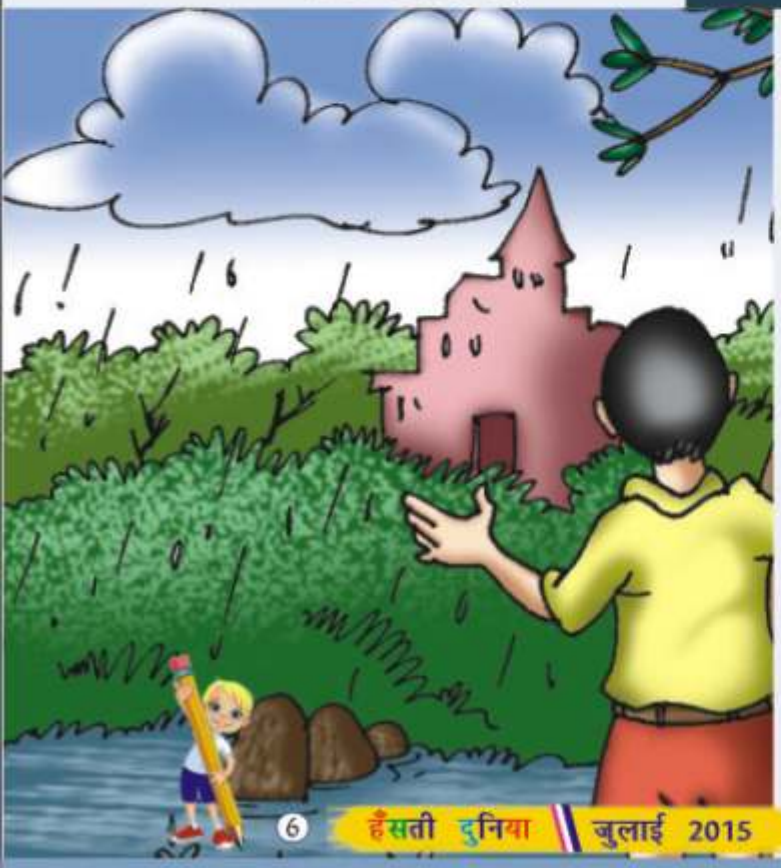

धूल उड़ी है गलियों
सूना आंगन–घर।
सन्नाटा है भीतर
सन्नाटा बाहर।।

आंधी सी मनमानी।
आओ बादल जी।

तुम आओ तो सावन
आए हरियाली।
इन्द्रधनुष उग आए
सतरंगों वाला।।

तुम तो ठहरे दानी
आओ बादल जी।

कहानी : डॉ. बानो सरताज

नन्हीं और नानी

"नानी, हमारे ये दो अखरोट रख लो।" मुट्ठी में दबे अखरोट नानी की ओर बढ़ाते हुए नन्हीं ने कहा।

"कहाँ से लाई हो?" नानी ने पूछा।

"अम्मी ने दिए हैं। अभी हम खेलने जा रहे हैं। वापस आकर खाएंगे।"

नानी मुस्कुरा पड़ी – वह खा नहीं सकती इसलिए उनके स्वाधीन कर गई है अख़रोट। बड़ी चालाक है।

नवासी (नातिन) में नानी के प्राण थे। थोड़े दिन उसे न देख पाती तो व्याकुल हो जाती। इस बार नन्हीं से मिलने आई तो नन्हीं की अम्मी ने उन्हें नन्ही के 'मिठाई–प्रेम' से अवगत कराया।

"बस दिन–रात मीठा ही खाने को मांगती है।"

"हर बालक को मीठा पसंद होता है।" नानी ने नन्हीं का पक्ष लिया।

"पर पसंद की एक सीमा होती है।"

"उसे बड़ी हो जाने दो। स्वयं समझ जाएगी।"

नन्हीं के पापा दौरे से वापस आए तो अम्मी ने बताया– आज भी स्कूल जाते समय नन्ही ने खूब ऊधम मचाया।

"क्या कहती थी?" पापा ने पूछा।

"मीठा पराठा ही टिफिन में ले जाने को मांगती थी।"

"तो दे दिया होता।" पापा सदा से बेटी के पक्षधर थे।

"देना तो पड़ा ही...पर" अम्मी कहते–कहते रूक गई।

"क्या बात है?"

"वह मीठे के सिवाय कुछ खाना ही नहीं चाहती है। दूध मलाई, जाम, जेली, मिठाई... चीनी... उसके दांतों में कीड़ा लग गया है।"

नानी के कान खड़े हो गए।

"छोड़ो भी, ये दांत तो गिर जाएंगे... हमारी बिटिया के पीछे न पड़ा करो।"

पापा ने बात खत्म कर दी और अम्मी बड़बड़ाती रह गई कि इसी लाड़–प्यार ने उसे बिगाड़ दिया है।

नन्ही के वश में होता वहाँ जन्म लेना पसंद करती जहाँ पानी की बजाय दूध का उपयोग होता हो, नल में शीत–पेय आते हों, चाक्लेट की रोटी और जेली की सब्जी का चलन हो; नमक के स्थान पर चीनी डाली जाती हो... मिठाई की प्रचुरता हो... और सबसे बड़ी बात यह कि मिठाई खाने पर टोकने वाला कोई न हो।

रात को नन्हीं, कहानी सुनने के लिए नानी के पास आईं तो नानी ने कहा, "नन्ही, तुम्हारे दांत दिखाओ।"

नन्हीं ने अविलंब होंठ चौड़े कर दिये।

"मुंह खोलो।" नानी ने कहा।

नन्ही ने मुंह खोला। नानी दहल गईं। सामने के दो और पीछे के भी दो दांत काले हो रहे थे। उन्होंने अनायास अपने पोपले मुंह में उंगली फिराई। नन्हीं तुरंत पूछ बैठी। "नानी, आपके दांत कहाँ गये? क्या गिर गये?"

''नहीं, निकाल दिये बल्कि यों कहो कि निकलवाने पड़े।'' नानी ने उत्तर दिया।

''क्यों?''

''खराब हो गये थे। कीड़ा लग गया था। दर्द होता था जब–तब।''

''कीड़ा लगने पर दांत में दर्द होता है नानी?'' नन्हीं ने, बाल–सुलभ कुतूहल से पूछा।

''और क्या? ऐसा–वैसा दर्द नहीं, बड़े 'जोर' का दर्द होता है।'' 'ज़ोर' शब्द पर नानी ने कुछ अधिक जोर देते हुए कहा।

''दाँत निकाल देने से भोजन करने में असुविधा होती है नानी?'' नन्हीं का अगला प्रश्न तैयार था।

''हाँ, जब जलेबी, पेड़े, गुलाब–जामुन खाती थी, चीनी के फक्के मारती थी तब बड़ा मजा आता था। सब रोकते थे, मैं नहीं सुनती थी। परिणाम क्या निकला? काले–सड़े दाँत!!''

''नानी, नकली दाँत भी तो लगाए जाते हैं। आप नकली दाँत क्यों नहीं लगा लेतीं?''

नन्ही ने सुझाव दिया।

''अभी तीन दाढ़े शेष हैं। वह निकल जाएं तो लगा लूंगी पर नन्ही बिटिया जो बात खुदा के बनाए दाँतों में है वह नकली दाँतों में कदापि नहीं आती।''

''नकली दाँतों से सबकुछ खा सकते हैं नानी?''

''बिल्कुल नहीं। मात्र नर्म चीज़ें खा सकते हैं... या फिर कूट–पीस कर खाना पड़ता है... कोई स्वाद नहीं आता। फिर ये दाँत कभी भी निकल सकते हैं। सबके सामने निकल जाएं तो लज्जित होना पड़ता है।''

नन्ही गुमसुम बैठी रही। पता नहीं क्या सोच रही थी? कहानी के लिए भी आग्रह नहीं किया।

दूसरे दिन की बात है... स्कूल से लौटकर नन्ही ने भोजन किया और नानी के पास आकर लेट गई। उसके पापा भोजन के लिए घर आए तो नानी के समीप आकर बोले, ''अम्मा, दाँत के डॉक्टर से समय ले लिया है, संध्या 6 बजे चलना है।''

''मैं तैयार हो जाऊंगी। बेटा, अब रहे–सहे दाँत भी निकलवा दो तो मुझे चैन पड़े।'' नानी ने कहा। फिर नन्हीं पर नज़र डाली, उसने आंखें बंद कर रखीं थीं पर निश्चित ही वह सोई नहीं थी।

नानी ने आगे कहा, ''बेटा, नन्ही को भी साथ ले चलेंगे। उसके भी दाँत खराब हो रहे हैं।''

''अरे नहीं अम्मा। डॉक्टर दाँत निकाल देगा।'' पापा घबराए।

''तो निकलवा देंगे। इतनी प्यारी लड़की के काले–काले दाँत अच्छे नहीं लगते।'' कहते–कहते नानी ने संकेत किया जिसे समझ कर पापा बोले, ''नये दाँत आने तक पोपले मुंह वाली नन्ही अच्छी लगेगी?''

"काले दाँत भी तो अच्छे नहीं लगते। क्या किया जाए, विवशता है। वह मीठा पसंद करती है तो हमें उसकी पसंद का ख्याल रखना चाहिए।"

नानी लेट गई। नन्ही को थपथपाने लगीं पर नन्ही की आंखों से नींद उड़ चुकी थी... आधा घंटा गुजर गया। एक बार नानी ने करवट बदली तो नन्ही ने उन्हें झिंझोड़ कर कहा, "नानी, नानी।"

"क्या हुआ?" नानी बौखला कर उठ बैठी।

"नानी। अभी हमारे सपने में एक राक्षस आया था।" नन्ही ने भयभीत होने का अभिनय करते हुए कहा।

"राक्षस!" नानी चकरा गई। कैसा था राक्षस? क्या चाहता था? क्या कहा उसने?"

"काला ऊंचा, पहाड़ जैसा राक्षस था।" नन्ही ने कहीं पढ़े राक्षस के वर्णन को याद करते हुए कहा।" उसके सिर पर बड़े–बड़े दो सींग थे... उसने कहा, "मीठा खाना छोड़ दो अन्यथा...।"

"ऐसे कैसे छोड़ दो। तुमने कहा नहीं कि तुम्हें मीठा बहुत पसंद है। तुम मीठा खाना नहीं छोड़ सकती।" नानी ने बनावटी रोष से कहा।

नन्ही आंखें चुराकर बोली, "कहा तो, पर उसने सुना नहीं।"

"चलो खत्म करो।" नानी लेटने के लिए तैयार होती हुई बोली, "अब यदि वह आए तो साफ कह देना कि दुनिया भले ही इधर की उधर हो जाए, तुम मीठा खाना नहीं छोड़ोगी।"

"पर नानी" नन्ही विनीत होकर बोली, "जब राक्षस ने कहा कि 'मीठा खाना नहीं छोड़ा तो वह हमें खा जाएगा' तो हमने वादा कर लिया।"

"कैसा वादा लड़की? कैसा वादा कर लिया?" नानी ने सिर पर हाथ मारते हुए कहा। "मीठे से दूर रहने का वादा कर लिया नानी।" नन्ही अब भी उनसे आंखें नहीं मिला रही थी..." अब हम कभी मीठे के लिए ज़िद नहीं करेंगे, सबेरे उठने पर और रात को सोने से पहले दांत साफ करेंगे... हमने अच्छा किया ना नानी। अब तो डॉक्टर हमारे दाँत नहीं निकालेगा ना?"

"नहीं निकालेगा।" नानी ने आश्वासन दिया "बहुत अच्छा किया। चल अब थोड़ी देर सो जा।"

नानी की गोद में दुबकते हुए नन्ही ने सोचा कि जब नानी जानती हैं कि हम सोए नहीं थे तो सपने की बात पर विश्वास कैसे कर लिया?... और नानी सोच रही थी कि दाँत के डॉक्टर वाला इलाज उन्हें पहले क्यों नहीं सूझा था।

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

इन्द्रधनुषी छटा सुहानी

इन्द्रधनुषी छटा सुहानी।
लेकर आई वर्षा रानी।
बादल दौड़े धन दे दानी।
खेती बाड़ी रानी धानी।

भरी नदी और ताल तलैया
पानी दर्पण लहर लहरिया।
टर्र–टर्र मेंढक मछली भईया
बीच धार में तैरे नइया।।

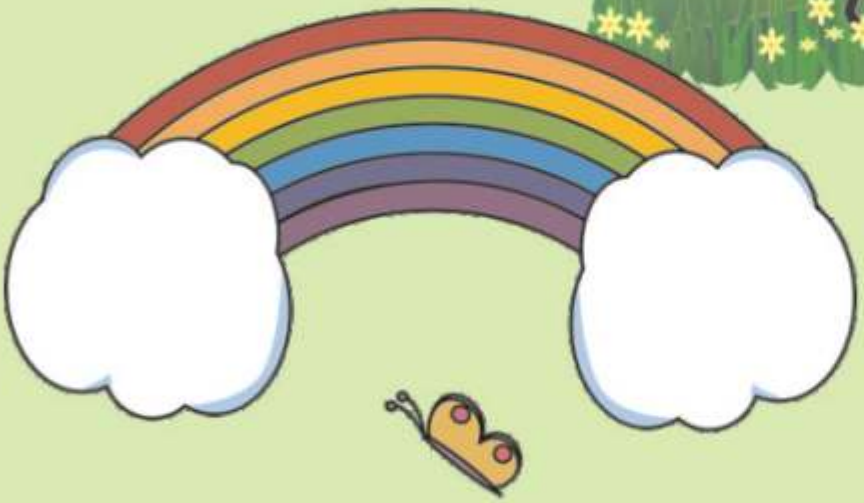

नीला नीला भरा समंदर
फूल खिले बाहर अंदर।
भौरें तितली मस्त कलंदर
घर से बेघर भीगे बंदर।

खेत खेत फूली फसलें,
जंगल हरिमा से लद चले।
हरियाली से खुशी निकले
आओ अन्न धन लाद चलें।

चौमासे में कई त्योहार
मिल मनाएं सब त्योहार।
जीत नहीं कोई न हार।
बांधे हैं एक ही कतार।

माइक्रोस्कोप

कथा एवं चित्रांकन
–पंकज राय

इस यंत्र में दो लेंस लगे होते हैं। जिस लेंस पर हम आँख लगाकर देखते हैं उसे आईपीस कहते हैं और जो लेंस नमूनों के पास रहता है उसे ऑबजेक्टिव लेंस कहते हैं। सामान्यतः आईपीस एक ही होता है परन्तु ऑबजेक्टिव लेंस अलग–अलग पावर का होता है। जिस काँच के प्लेट पर नमूने को रखा जाता है उसे स्लाइड कहते हैं। स्लाइड को स्टील के क्लिप के सहारे अटका दिया जाता है ताकि जाँच करते समय नमूना स्थिर रहे, हिले नहीं।
माइक्रोस्कोप के नॉब घुमाने से ऑबजेक्टिव लेंस ऊपर नीचे होता है जिससे जाँच के लिए रखे नमूने पर सही फोकस करने में मदद मिलती है।
पुराने जमाने में स्लाइड के नीचे एक लैंस होता था जो कि सूर्य अथवा किसी दीपक की रोशनी को स्लाइड पर केंद्रित करता ताकि तेज रोशनी में सूक्ष्म वस्तु अधिक स्पष्ट रूप से दिखे। आजकल के माइक्रोस्कोप में रोशनी के लिए बल्ब लगा होता है। कभी–कभी जाँच के नमूनों को गहरे लाल या नीले रंग से रंगा जाता है जिससे कि उन्हें और अधिक स्पष्टता से देखा जा सके।
माइक्रोस्कोप से देखने पर साधारण–सी दिखने वाली मक्खी की आँख भी विशालकाय जान पड़ती है।
ब्राउनी को माइक्रोस्कोप के बारे में जानकर बहुत मजा आया।
धन्यवाद ब्लैकी। माइक्रोस्कोप के बारे में तुमने आज मुझे बहुत अच्छी–अच्छी जानकारियां दी।

अजब–गजब : मिताली जैन

कभी देखा है ऐसा पेड़!

प्रकृति में निहित सौंदर्य को सभी जानते हैं लेकिन उसमें छिपे रहस्यों को जान पाना अभी तक मनुष्य के लिए संभव नहीं हो पाया है। प्रकृति ने इतनी विविधतापूर्ण जीवसृष्टि की रचना की है कि हर कहीं कुछ न कुछ अलग व अद्‌भुत दिख ही जाता है। हमारे जीवन के अभिन्न अंग माने जाने वाले पेड़–पौधे सिर्फ हमारे लिए खाद्य पदार्थ या मधुर पेय ही नहीं जुटाते बल्कि अपनी विलक्षणताओं से हमें आश्चर्यचकित भी कर देते हैं। ऐसा ही एक अनोखा पेड़ है ड्रेगन ब्लड ट्री। आप इसके नाम पर मत जाइए, इसका नाम जितना भयावह है, वह उतना ही सुंदर है। इस पेड़ की संरचना ही इसकी खासियत है। इसे देखकर लगता है कि जैसे प्रकृति ने मनुष्यों के लिए अपनी छतरी खोल दी हो।

हिंद महासागर में सोकोटा द्वीपसमूह व पश्चिमी मोरक्को में पाया जाने वाला ड्रेगन ब्लड ट्री बहुत ही धीमी गति से विकसित होता है। वैसे यह सोकोटरा ड्रेगन ट्री व डेकेइना सिनाबेरी के नाम से भी जाना जाता है। डी सिनोबरी की सर्वप्रथम जानकारी 1835 में सोकोटा में ईस्ट इंडिया कंपनी को एक सर्वेक्षण में प्राप्त हुई, जिसका नेतृत्व लेफ्टिनेंट वेलस्टेड ने किया था। इसे सबसे पहले पेटोकार्पस डेवत्र नाम दिया। लेकिन 1880 में एक स्कॉटिश वनस्पतिशास्त्री इसहाक बेले बाल्फोर ने ड्रेगन ट्री की विभिन्न प्रजातियों में से इसका औपचारिक वर्णन किया, साथ ही उन्होंने इसका नाम बदलकर डेकेइना सिनाबेरी रखा।

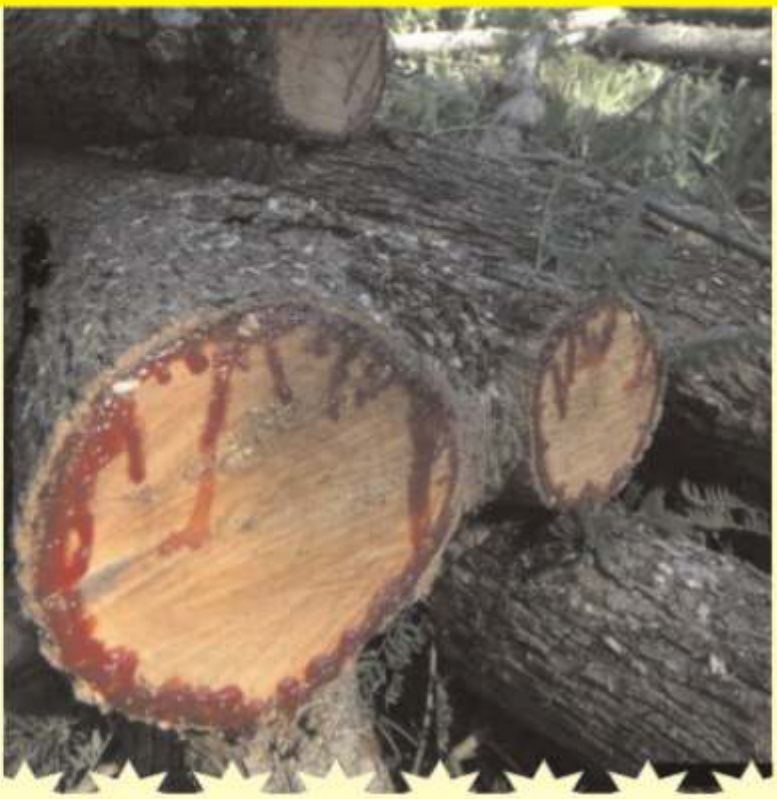

आपको यह बता दें कि डेकेइना 60 से 100 प्रजातियों के बीच केवल छह प्रजाति ही ऐसी हैं, जिसका विकास एक पेड़ की तरह हुआ है। उन छह प्रजातियों में डी सिनाबेरी भी एक प्रजाति है। ड्रेगन ब्लड ट्री सोकोटा द्वीप का सबसे प्रसिद्ध व विशिष्ट वृक्ष है, जिसका मुख्य कारण उसका आकार है। यह ड्रेगन ब्लड ट्री का आकार है। जिसके चलते वह काम मिट्टी वाले शुष्क स्थानों में भी आसानी से विकसित हो सकता है। ड्रेगन ब्लड ट्री की शाखाएं परिपक्व होने पर स्वतः ही एक छतरी का आकार ले लेती हैं तथा पत्तियों सहित यह करीबन 60 सेंटीमीटर लंबा व 3 सेंटीमीटर चौड़ा होता है। पेड़ का तना व उसकी शाखाएं काफी मोटी और ताकतवर होती हैं तथा प्रत्येक शाखा बार–बार दो वर्गों में विभाजित हो जाती है। इस पेड़ पर पत्तियां केवल उसकी सबसे कम उम्र की शाखाओं के अंतिम छोर पर ही पाई जाती है। इस पर तीन से चार साल में नई पत्तियां आती हैं, तब तक पुरानी पत्तियां पूरी तरह परिपक्व हो जाती हैं तथा वह फिर एक शेड की तरह काम करती हैं। इस पेड़ पर फूल लगभग फरवरी के महीने में आते हैं। वैसे इस पेड़ पर फूल लगने की प्रक्रिया उस स्थान के वातावरण पर भी निर्भर करती है। ड्रेगन ब्लड ट्री की शाखाओं के अंतिम छोर पर सफेद व हरे रंग के सुगंधित फूलों का गुच्छा लगता है।

इसमें छोटे जामुन के फल भी विकसित होते हैं, जिसमें एक से तीन बीज पाए जाते हैं। जैसे ही इस पेड़ पर फल लगने शुरू होते हैं तो प्रारंभिक चरण में वह हरे रंग से बदलकर काले हो जाते हैं तथा जब इन फलों का पूरी तरह विकास होता है तो वे अंत में ऑरेंज रंग में तब्दील हो जाते हैं। इन फलों को पूरी तरह परिपक्व होने में करीबन पांच महीने का समय लगता है। ये फल अधिकतर पक्षियों द्वारा खाए जाते हैं। इस पेड़ के आकार का छतरी जैसा होने के पीछे कहीं न कहीं कारण यह पक्षी भी हैं, क्योंकि जब यह पेड़ पर बैठकर अपनी चोंच की सहायता से जामुन खाते हैं तो इसकी पत्तियां भी तितर–बितर हो जाती हैं। पेड़ों की इस सदाबहार प्रजाति के वृक्षों को काटने पर खून की तरह का लाल रंग निकलता है, जिसके कारण इसे ड्रेगन ब्लड ट्री नाम दिया गया है।

बाल कहानी : अर्पित सक्सैना

छोटों पर भरोसा

एक बार की बात है। एक चिड़िया अपने घोंसले में बैठी अपने बच्चों को दाना खिला रही थी। उसका नाम था चीं–चीं चिड़िया। चीं–चीं ने देखा कि बाहर वर्षा हो रही है। उसने बाहर आकर देखा कि चम्पू बंदर छत पर बैठा कांप रहा है। जब बरसात बन्द हो गई तो चीं–चीं बन्दर के पास गई और बोली– बन्दर मामा! मैंने आपसे कहा था न कि आप अपना घर बना लीजिए।

चम्पू बन्दर बोला– "मैं अपना घर बनाऊं कैसे? मैं जहाँ भी जाता हूँ लोग मुझे वहाँ से भगा देते हैं। इस हालत में तुम्हीं बताओं कि मैं क्या करूँ?"

चिड़िया बोली– "तुम जहाँ भी जाओ किसी को परेशान मत करो। फिर तुम देखना कि कहीं न कहीं रहने की जगह अवश्य मिल जायेगी।"

चम्पू बन्दर बोला– "ठीक है। मैं ऐसा ही करूँगा। ऐसा कहकर चम्पू बन्दर वहाँ से चला गया।"

एक दिन फिर वर्षा होने लगी। चम्पू बन्दर सड़क किनारे बैठ गया। लोग उसके पास से गुजरने लगे। लेकिन चम्पू बन्दर ने किसी को परेशान नहीं किया। इसी बीच एक दयालु व्यक्ति आया और उसने देखा कि चम्पू बन्दर कांप रहा है। उसने अपना छाता बन्दर के ऊपर तान दिया और चम्पू बन्दर को अपने साथ घर ले गया।

व्यक्ति ने ठंड से कांपते हुए चम्पू बन्दर को पहले खाने की रोटी दी और फिर उसे अपने घर की छत पर बनीं बालकनी पर बैठा दिया। अब बन्दर वहाँ आराम से रहने लगा।

–इस कहानी का तात्पर्य यह है कि हमें हमारे से छोटे कोई अच्छी बात कहें तो उसे मान लेना चाहिए।

हँसती दुनिया समाचार

ब्रिटेन में भारतीय मूल के विद्यार्थी ने भौतिकी का पुरस्कार जीता

लंदन। ब्रिटेन में भारतीय मूल के 15 वर्षीय एक स्कूली छात्र को अल्बर्ट आइंस्टीन के विशेष सापेक्षता के सिद्धांत के प्रभाव को सत्यापित करने वाला प्रयोग करने को लेकर 'इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स प्राइज' से पुरस्कृत किया गया है।

कैम्ब्रिज के 'पर्से स्कूल' के छात्र प्रताप सिंह ने मार्च में बर्मिंघम के 'नेशनल एक्जिबिशन सेंटर' में हुए 'बिग बैंग' मेले में यह पुरस्कार जीता जिसके तहत 500 पौंड दिये जाते हैं। वह मेले की 'नेशनल साइंस एंड इंजीनियरिंग कम्पीटिशन' में पुरस्कृत विद्यार्थियों में एक है। फाइनल में 11–18 साल उम्र के दो सौ से अधिक ब्रिटिश विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया और अपना प्रोजेक्ट आंगुतकों को दिखाया। प्रताप ने कहा, मैं आई.ओ.पी. पुरस्कार जीतकर बहुत रोंमांचित हूँ।

मंगल पर भूजल की मौजूदगी के नये साक्ष्य

वैज्ञानिकों को मंगल पर भूजल की मौजूदगी के नये साक्ष्य मिले हैं। साथ ही, यह भी कहा गया है कि पृथ्वी के पर्यावरण जैसी परिस्थितियां मंगल पर सूक्ष्मजीवों के पनपने के लिए अनुकूल रही होंगी। शोधकर्ताओं ने मंगल पर फिरसोफ क्रेटर इलाके में अरबिया टेरा के 'इक्वीटोरियल लेयर्ड डिपोजिट' (ईएलडी) की जांच की ताकि उसकी संरचना और जीवन योग्य संभावित वातावरण को समझा जा सके। पठार पर ईएलडी में कच्चा टीला, समतल डिपोजिट (निक्षेप) और आड़े तिरछे टीले वाले मैदान हैं।

इटली स्थित इंटरनेशनल रिसर्च स्कूल ऑफ प्लेनेटरी साइसेंज की मोनिका पोंडेरेली और उनके सहकर्मियों ने इन टीलों की व्याख्या छोटे 'स्प्रिंग (सतह या चट्टान में पानी का प्राकृतिक प्रवाह) डिपोजिट (निक्षेप)' के रूप में की है जबकि समतल डिपोजिट की व्याख्या एऑलिअन (वातोढ़) के रूप में की है।

उन्होंने इस बात का जिक्र किया कि भूजल का उतार–चढ़ाव एएलडी डिपोजिट को नियंत्रित करने के लिए बड़ा कारण है। 'स्प्रिंग' और प्लाया डिपोजिट जलीय चक्र की

संभावित मौजूदगी का संकेत देता है जिसने शून्य से ऊपर के सतह के तापमान पर भूजल के नीचे से ऊपर उठने में योगदान दिया होगा।

ऐसा मच्छर जिस पर नहीं होता दवा का असर

लंदन। वैज्ञानिकों ने भारत पर मलेरिया के ऐसे परजीवियों के खतरे की चेतावनी दी है, जो दवा–प्रतिरोधी हैं। ये परजीवी म्यांमार–भारत सीमा के पास पाए गए हैं। यह बहुत तेजी से फैल रहे हैं। विशेषज्ञों ने इसकी रोकथाम के लिए विश्वव्यापी प्रयास करने का आग्रह किया है।

शोधकर्ताओं ने कहा कि भारत में आर्टेमिसिनिन दवा के प्रतिरोधक परजीवियों का प्रसार मलेरिया पर वैश्विक नियंत्रण एवं उन्मूलन प्रयास के लिए गंभीर खतरा पैदा करेगा। यह परजीवी म्यांमार में भारत की सीमा से 15 किलोमीटर की दूरी पर पाया गया है। विश्व में हर साल छह लाख लोग मलेरिया से मर जाते हैं। उन्होंने कहा, 'यदि दवा प्रतिरोधकता ऐशिया से अफ्रीकी महाद्वीप की ओर फैल जाती है या अफ्रीका में स्वतंत्र तौर पर पैदा हो जाती है (जैसा कि पहले भी हो चुका है) तो लाखों जिंदगियों पर खतरा पैदा हो जाएगा।'

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में इस अध्ययन के वरिष्ठ लेखक व माहिडोल–ऑक्सफोर्ड ट्रॉपिकल मेडिसिन रिसर्च यूनिट के डॉक्टर चार्ल्स वूडरो ने कहा 'म्यांमार को आर्टीमिसिनिन प्रतिरोधकता में लड़ाई में सबसे अग्रिम मोर्चे पर माना जाता है क्योंकि यह इस प्रतिरोधकता के शेष विश्व में फैलने का रास्ता बनाता है।'

वेलकम ट्रस्ट में संक्रमण एवं प्रतिरोधकता मामलों के प्रमुख प्रोफेसर माइक टर्नर ने कहा 'दवा प्रतिरोधी मलेरिया परजीवियों की उत्पत्ति 1960 के दशक में दक्षिणपूर्वी एशिया में हुई और वहाँ से यह म्यांमार से भारत में और फिर शेष दुनिया में फैल गया और इसने लाखों लोगों की जिंदगियां लील लीं।' टर्नर ने कहा, 'नया शोध दर्शाता है कि मलेरिया के आधुनिक इलाज के प्रमुख आधार यानी आर्टीमिसिनिन दवाओं की प्रतिरोधकता के मामले में इतिहास खुद को दोहरा रहा है और यह इस समय म्यांमार में व्यापक स्तर पर है। इस प्रतिरोधकता के भारत में फैल जाने और लाखों जिन्दगियों के जोखिम में पड़ने का खतरा है।' (एजेंसिया)

(संग्रहकर्ता : बबलू कुमार)

बाल कविता : रामअवध राम

बरसात का मौसम

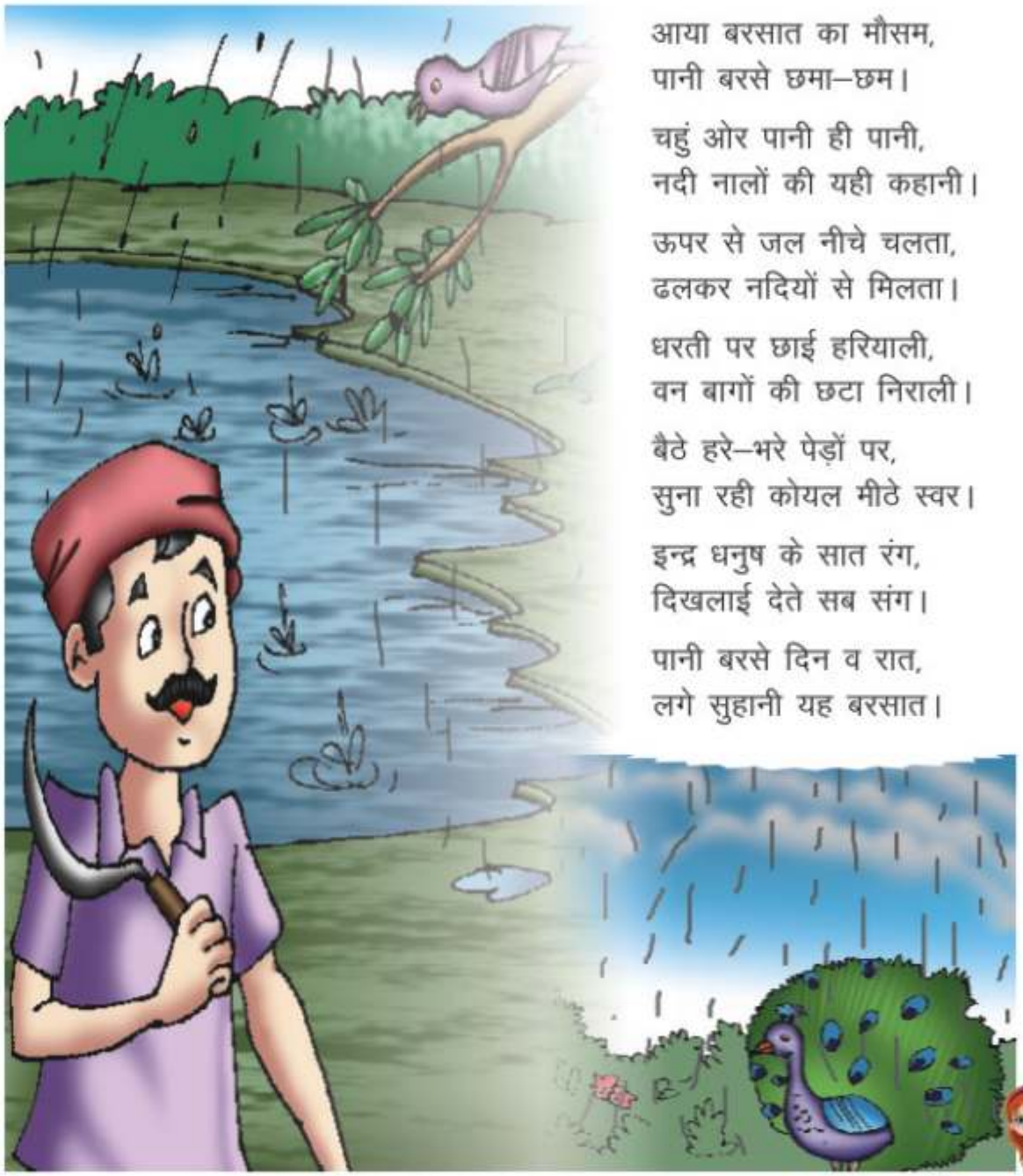

आया बरसात का मौसम,
पानी बरसे छमा–छम।

चहुं ओर पानी ही पानी,
नदी नालों की यही कहानी।

ऊपर से जल नीचे चलता,
ढलकर नदियों से मिलता।

धरती पर छाई हरियाली,
वन बागों की छटा निराली।

बैठे हरे–भरे पेड़ों पर,
सुना रही कोयल मीठे स्वर।

इन्द्र धनुष के सात रंग,
दिखलाई देते सब संग।

पानी बरसे दिन व रात,
लगे सुहानी यह बरसात।

कभी न भूलो

संकलनकर्ता : विभा वर्मा (वाराणसी)

★ जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अंत होता है।

– बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

★ हमारा दूसरे लोगों के साथ जो सम्बन्ध होता है, प्रायः उसी से हमारे सभी शोक और दुःखों का जन्म होता है।

★ आत्म–विश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं, आत्म–विश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढ़ी है। – स्वामी विवेकानन्द

★ अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर लेना हमेशा सुखद होता है।

★ प्रत्येक मनुष्य को अपना जीवन प्रिय होता है परन्तु महान पुरुष को अपनी इज्जत जीवन से कहीं अधिक मूल्यवान और प्रिय होती है। – शेक्सपीयर

★ जिस प्रकार जो खेत उत्तम उपज देता है, वह उत्तम माना जाता है, ठीक इसी प्रकार उत्तम स्त्री–पुरुषों को जन्म देने वाला देश भी श्रेष्ठ होता है।

– विनायक दामोदर सावरकर

★ वही उन्नति कर सकता है, जो स्वयं अपने को उपदेश देता है। – स्वामी रामतीर्थ

★ सबसे बड़ी मूर्खता है स्वास्थ्य को किसी अनिश्चित लाभ के लिए बर्बाद कर देगा।

★ भद्रता समझदारी है, इसलिए अभद्रता मूर्खता है।

★ विश्वास और प्रेम में एक बात समान है, दोनों में से कोई भी जबरदस्ती पैदा नहीं किया जा सकता। – शोपेनहावर

★ यह धरती ही हमारी कर्म भूमी है।

★ ज्ञान–रूपी कीमत जवाहरात को छिपाकर रखने से उसकी आभा नष्ट हो जाती है।

–मुंशी प्रेमचन्द

★ बुराई के बारे में सोचना, बुराई करने से भी बुरा है। –मनुस्मृति

दृढ़ निश्चय

कहानी :
दर्शन सिंह 'आशट' (डॉ.)

रजनी की आयु होगी कोई पन्द्रह–सौलह वर्ष की। पोलियो के कारण उसकी दोनों टांगें बचपन से ही नकारा हो चुकी थीं लेकिन उसमें आगे बढ़ने का बहुत ज़ज़्बा और उत्साह था। वह अपने गाँव से ट्राई साइकिल पर तीन किलोमीटर की दूरी तय करके शहर में पढ़ने आती।

वर्षा होने के कारण स्कूल के आस–पास बड़ी–बड़ी घास हो गई थी। स्कूल का माली मोहन कई दिनों से बीमार था। इसी कारण स्कूल में घास काटने का बंदोबस्त नहीं हो सका। रजनी के कक्षा कमरे के पिछवाड़े भी काफी घास हो गया था। अध्यापक मोहनलाल जी कह चुके थे कि बड़े हो चुके घास को कटवाना बहुत जरूरी है। आखिर वही हुआ जिसका डर श्री मोहनलाल जी ने प्रकट किया था।

एक दिन रजनी की कक्षा के सभी छात्र–छात्राएं खेल के मैदान में खेल रहे थे। हिंदी के पीरियड की घण्टी बजी तो सभी बच्चे अपनी कक्षा के कमरे की ओर आने लगे। छात्रों को कमरे में बैठे अभी थोड़ा ही समय हुआ था। वे अध्यापक जी के आने का इंतजार कर रहे थे। अचानक ही कक्षा में पीछे वाले बैंच पर बैठे राहुल ने अपने बैंच की टांग से लिपटा हुआ सांप देखा तो उसने एकदम शोर मचा दिया– 'सांप–सांप।'

सभी छात्र–छात्राएं चिल्लाते हुए कमरे से बाहर भागने लगे। वह सांप कमरे के बाहर उगी घास से निकल कर पिछली खिड़की से कक्षा के कमरे के अंदर आ गया था।

रजनी कक्षा के मध्य में अपनी सहेली पूजा के साथ बैंच पर बैठी थी। पूजा ने उसे तत्काल बाहर निकलने के लिए कहा और उसकी मदद करने लगी लेकिन कमरे से एकदम बाहर निकलना रजनी के लिए सम्भव नहीं था।

रजनी ने देखा, सांप तीन फुट से ज्यादा बड़ा था। छात्रों के शोर से सांप घबराकर इधर–उधर भागने लगा। लेकिन कमरे का फर्श पक्का था। इसलिए सांप छिपने के लिए कोई बिल वगैरह ढूंढने लगा।

रजनी ने फौरन दिमाग से काम लिया। उसने अपना और अपनी सहेली पूजा का बैग खाली किया और दोनों को फर्श पर रख दिया।

रजनी की योजना काम कर गई।

ज्यों ही सांप फर्श पर पड़े एक खाली बैग में जा घुसा तो रजनी ने फुर्ति से बैंच से उठकर बैग का मुंह दोनों हाथों से मजबूती से बंद कर दिया।

सांप की पूछ बैग से बाहर दिख रही थी।

"रजनी छोड़ दे बैग। सांप तुम्हें डस लेगा। बैग छोड़ दो।" बाहर से कमरे के अंदर यह सारा दृश्य देख रहे कुछ छात्र चिल्लाये लेकिन रजनी ने बैग का मुंह दोनों हाथों से बंद करके रखा।

तब तक स्कूल का सेवादार प्राणनाथ हाथ में लाठी लिए कमरे में आया। जब उसने रजनी को फर्श पर एक बैग के मुंह को दोनों हाथों से बंद किए देखा तो वह दंग रह गया।

प्राणनाथ चिल्लाया, "ए लड़की, तुम इसे छोड़ दो। जल्दी करो। बैंच पर जा चढ़ो। मैं इसे अभी मार देता हूँ। तुम इतना खतरा मोल मत लो। सांप तुम्हें डंक मार सकता है।"

"अंकल जी, सांप अब बाहर नहीं आ सकता क्योंकि मैंने बैग का मुंह मजबूती से बंद किया हुआ है।" रजनी ने जवाब दिया।

सांप बैग के अंदर फुंकार रहा था लेकिन रजनी बिल्कुल नहीं डर रही थी।

तभी स्कूल के प्रिंसीपल साहब, अध्यापक और अन्य कर्मचारी कमरे में आ गये। उन्होंने कहा, "इस सांप को मारना ही ठीक रहेगा। तुम एकदम बैंच पर चढ़ जाओ। बैग में घुसे सांप को मारना एकदम आसान है।"

"नहीं नहीं अंकल, इसे मारना मत। अब यह मेरे चंगुल से बाहर नहीं निकल सकता और न ही किसी का नुकसान कर सकता है। मैं चाहती हूँ कि इसे चिड़ियाघर में दिया जाये।" रजनी बोली।

विज्ञान अध्यापक रमेश जी बोले, "बिल्कुल ठीक कह रही है रजनी।"

तब तक सांप को उसी बैग में अच्छी तरह बंद कर लिया गया और ऊपर से रस्सी कसकर बांध दी गई।

प्रिंसीपल साहब ने रजनी का सुझाव मान लिया। जब स्कूल का सेवादार और चौकीदार रजनी के साथ सांप को चिड़ियाघर वालों को सौंपने के लिए गये तो चिड़ियाघर के मुख्य प्रबंधक को सारी घटना का पता चला तो वह बोले, ''पहले तो मैं यह जानकर बहुत हैरान हूँ कि एक ऐसी लड़की ने इस सांप को काबू किया जो पोलियो की शिकार है। दूसरी बात यह है कि उसके मन में जीव–जन्तुओं के प्रति कितना स्नेह और प्यार है। वह जानती है कि सांप हमारा दुश्मन नहीं है बल्कि वह खतरा महसूस होने पर ही व्यक्ति को डंक मारता है। इसके जहर से तो कई लाभकारी दवा बनती है।''

इस बार स्कूल का वार्षिक उत्सव हुआ तो रजनी को बहादुरी का सम्मान देने के लिए चिड़ियाघर के मुख्य प्रबंधक खुद आये और बोले, ''रजनी जैसी लड़की हमारे लिए एक मिसाल है जो शारीरिक अपंगता के कारण भी किसी से कम नहीं है। इसने अपनी सूझ–बूझ से न केवल अपने सहपाठियों को खतरे से बचाया बल्कि बड़ी बहादुरी के साथ सांप को काबू करके चिड़ियाघर तक पहुँचाने में मदद की है।''

सम्मान लेने के बाद जब रजनी अपनी सहेलियों से मिल रही थी तो कुछ सहेलियां कह रही थीं, ''रजनी, जो काम हम से भी न हो सका, वो तुम अकेली ने कर दिखाया। हमें तुम पर गर्व है।''

रजनी बोली, ''दृढ़ निश्चय हो तो बड़े–बड़े संकटों को भी आसानी से हल किया जा सकता है।''

तभी पंडाल में समारोह का आनन्द ले रहे रजनी के मम्मी–पापा ने आकर अपनी बेटी को गले लगाया तो रजनी को लगा जैसे उसकी बेजान टांगों में जान आ गई हो और ताकत भी दोगुनी हो गई हो।

पहेलियां

– प्रस्तुति : राधा नाचीज (नज़फगढ़)

1. मुख से सदा मुझे बोलो,
तो सम्मान तुम्हारा है।
उस पर कोई आंच नहीं,
जिसने मुझे संवारा है।

2. एक किले में चोर बसे हैं,
सबका मुंह है काला।
पूंछ पकड़ कर आग लगाई,
झट कर दिया उजाला।

3. एक नारी का मैला रंग,
लगी रहे वह पी के संग।
रोशनी में संग विराजे,
अंधेरे में छोड़ के भागे।

4. एक अनोखी ऐसी चीज,
उजली धरती काला बीज।
जो हैं इससे करते प्यार,
वे बन जाते होशियार।

5. एक बड़ी एक छोटी नार,
एक ही नाम धरा करतार।
छोटी ज्यादा महंगी आए,
मुंह को तनिक में तर कर जाए।

6. एक बगिया में फूल अनेक,
उन फूलों का राजा एक।
बगिया में जब चंदा आए,
बगिया चम–चम खिल–खिल जाए।

7. एक वस्तु को हमने देखा,
छाती ऊपर दांत।
बिन मुख गावे राग रागिनी,
करे रसीली बात।

8. घर में उछलकूद करता,
नीली आंखों से मैं डरता।
घर में जो कुछ मिल जाता,
कुतर–कुतर उसको खा जाता।

9. पौर्टलैण्ड सीमेंट जिससे
बनते इमारत और मकान
नाम बताओ उस वैज्ञानिक का
जिसने किया महान आविष्कार।

10. मैं रहता काला का काला
चाहे साबुन से मुझे धोलो।
मैं रहता मिट्टी के नीचे,
नाम मेरा झट बोलो।

(उत्तर : किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

प्रेरक प्रसंग : नेहा नागपाल

चाँदी के बर्तन

बंगाल के सुप्रसिद्ध कवि और नाटककार गिरीशचन्द्र घोष के एक अच्छे दोस्त थे जो काफी बड़े रईस थे पर उनमें सौजन्यता नाम की कोई चीज न थी। सदा पैसे के घमण्ड में चूर रहते थे। घोष महाशय उनसे सीधे कुछ कह पाने में संकोच का अनुभव करते लेकिन उन्हें सबक जरूर सिखाना चाहते थे। एक दिन उन्हें ऐसा अवसर सहज ही उपलब्ध हो गया। उनके दोस्त जहाँ कहीं भी जाते, उनके साथ उनका नौकर चांदी के बर्तन भी लेकर चलता। वह अपने चाँदी के पात्रों में भोजन करते।

एक दिन घोष महाशय के यहाँ भोज का आयोजन था। उन्होंने अपने रईस मित्र को भी बुलाया था। जैसा कि पूर्वानुमान था, वह अपने नौकर के साथ आए और साथ में अपने चांदी के पात्र भी लाये।

घोष जी ने उन्हें सबके बीच तो नहीं बैठाया पर अलग बैठाकर पत्तलों में खाना परोसा गया। उनके लिए यह स्थिति अकल्पनीय थी और लज्जा की बात थी। पर दोस्ती के नाते कुछ कह नहीं सके। मन मार कर खाना खाया।

जब वह चलने लगे तो गिरीश बाबू का रसोइया उन चांदी के पात्रों में भोज्य पदार्थ भरकर ले आया और गिरीश बाबू ने अपने धनी मित्र से कहा– आपकी आवभगत में कोई त्रुटि हुई हो तो क्षमा कीजिए। आपका नौकर चांदी के बर्तन लाया तो भीतर लोगों ने सोचा कि घर के बच्चो के लिए भोजन ले जाने की लिए ये पात्र लाए गए थे, इसलिए कुछ दिया है, कृपया हमारी ओर से बच्चों को दे दीजिएगा और आपके साथ तो हमारी आत्मीयता है ही।

रईस सज्जन की सारी रईसी धरी रह गई। मारे शर्म के पानी–पानी हो गया। आगे से वह जहाँ कहीं भी जाते, भूलकर भी अपने पात्र न ले जाते।

पहेलियों के उत्तर :

1. सत्य 2. माचिस 3. परछाई 4. पुस्तक 5. इलायची
6. आकाश में चन्द्रमा 7. हारमोनियम 8. चूहा 9. जोसेफ एस्पीडर्न 10. कोयला।

दो बाल कविताएं : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

बिना परिश्रम कुछ नहीं

परिश्रम जितना हम करें,
मंजिल होगी पास।
बिना परिश्रम कुछ नहीं,
बैठे रहो निराश।

मेहनत से मंजिल मिले,
सफल रहे सब काज।
मेहनत का फल मीठा,
मिले आज का आज।

जीवन में परिश्रम से,
नौका होती पार।
हर कदम पर सफलता,
नहीं पड़ेगी मार।

जीवन-करुणा-सा पानी हो

बूढ़े मात–पिता या कोई,
सबकी सेवा हमको करनी।
पीड़ित प्राणी चाहे कोई,
उसकी रक्षा हमको करनी।

नहीं किसी का दिल हम तोड़ें
मीठे बोल सदा ही बोलें।
जितनी हमसे बन पाती हो,
सेवा का दरवाजा खोलें।

चाहे मानव, पशु, पक्षी हो,
चाहे चींटी–सा प्राणी हो।
हिंसा से हम दूर सदा हों,
जिह्वा पर मीठी वाणी हो।

जानकारी पूर्ण लेख : सुप्रिया

रोचक इतिहास है गुब्बारों का....

मेले या हाट बाजार में रंग–बिरंगे गुब्बारों को देखकर ऐसा लगता है कि केवल बच्चों के खेलने भर का एक खिलौना है, पर गुब्बारों का इतिहास जानें तो पता चलता है कि गुब्बारों से लड़ाई लड़ी गयी। गुब्बारों की खोज का किस्सा भी अत्यधिक रोचक जान पड़ता है।

दरअसल गुब्बारों की शुरुआत 17वीं शताब्दी में फ्रांस से हुई। दो भाई थे, एक का नाम स्टीफन और दूसरे का जोसफ था। दोनों फ्रांस के एनोएन नगर में रहते थे। दोनों भाइयों की इच्छा थी कि उड़ने की कला सीखी जाए। उन्होंने सोचा यदि कागज का एक थैला बनाकर उसमें भाप भर दी जाए तो वह हवा में तैरेगा। दिन था 5 जून 1783 का। कागज का 10 मीटर व्यास का एक खोखला गोला बनाया और इसे एक खंबे के ऊपर बांध दिया और नीचे भूसा जलाया गया। भूसे के जलने से धुआं बना वह कागज के खोखले गोले में समाता गया। धुआं भरने से गोला हल्का होने लगा और कुछ ही मिनटों में 1800 मीटर की ऊंचाई पर जा पहुँचा। मगर वह जल्दी ही वापस नीचे गिरने लगा।

इस प्रयोग की खबर फ्रांस के ही एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक चार्ल्स को लगी। चार्ल्स ने इस प्रयोग को दोहराने का निश्चय किया। चार्ल्स को यह पता था कि धुएं के बदले यदि हाइड्रोजन गैस भरी जाए तो गुब्बारा ज्यादा ऊपर तक जाएगा, क्योंकि हाइड्रोजन गैस हवा से साढ़े चौदह गुना हल्की होती है, इसलिए चार्ल्स ने धुएं के बदले हाइड्रोजन गैस का इस्तेमाल किया। उस समय गुब्बारा उड़ाना किसी जादू से कम नहीं था, इसलिए उसने गुब्बारा उड़ाने के लिए चंदा इकट्ठा किया। अपने साथियों की मदद से उसने 4 मीटर व्यास का रेशम का एक गुब्बारा बनाया और अंदर से उस पर गोंद पोत दिया ताकि गैस बाहर न निकल पाये। उस समय हाइड्रोजन गैस लोहे पर गंधक के अम्ल की क्रिया से बनायी जाती थी। 23 अगस्त 1783 को एक दिन पूर्व रेशम के गोले को 3 किलोमीटर दूर एक मैदान में ले जाया गया। वहाँ उसे देखने के लिए लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। लोग रहस्यमयी निगाहों से गुब्बारे के इस रूप को देख रहे थे।

शाम 5 बजे गुब्बारा उड़ाया गया। गुब्बारा काफी हल्का था। दो मिनट से भी कम समय में 100 मीटर की ऊंचाई पर उड़ गया। इस दृश्य को देखकर बच्चे बड़े हर्ष मिश्रित आश्चर्य व्यक्त कर रहे थे। देखते–देखते बरसात होने लगी और गुब्बारा एक बादल में ओझल हो गया।

ऐसा अनुमान लगाया कि गुब्बारा 6 हजार मीटर की ऊंचाई तक गया होगा। गुब्बारा पेरिस से 25 किलोमीटर दूर एक खेत में जा गिरा। गुब्बारे को गिरते हुए दो किसान देख रहे थे। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। पहले तो वे गुब्बारे को आसमान से उतरने वाला कोई दैत्य समझ बैठे। फिर सोचने लगे कि शायद कोई मरा जानवर है। डर के मारे वे उसके नजदीक नहीं जा रहे थे। उन्होंने गुब्बारे पर दूर से पत्थर मारने शुरू किये। नतीजा यह हुआ कि गुब्बारा फिस्स हो गया। फिर उनमें से एक बहादुर किसान उसके पास गया और धीरे से फटे गुब्बारे को एक घोड़े की पूंछ से बांधकर गाँव की ओर गया। गाँव के एक पादरी के पास जाकर किसान ने प्रार्थना की कि वह उन्हें इस जानवर के बारे में जानकारी दे। पादरी ने देखा कि गुब्बारे के साथ एक चमड़े के थैले में कागज पर चार्ल्स का नाम लिखा था और एक सूचना लिखी थी कि जिस किसी को भी गुब्बारा मिले, वह इसको लिखे हुए पते पर पहुँचा दे। दोनों किसान बेहद खुश हुए।

जैसे–जैसे गुब्बारों का प्रचलन बढ़ा, उनके साथ अनेक प्रयोग किये जाने लगे। सन् 1808 में दो लोगों ने गुब्बारों के जरिये हवा में लड़ाई लड़ी। ये दो आदमी एम.डी.ग्राडपर और एम. एल.पिक थे। दोनों के बीच एक अभिनेत्री को लेकर लड़ाई चल रही थी। दोनों ने गुब्बारों द्वारा युद्ध करने का फैसला किया। इस युद्ध में पिक और उसके सहायक मारे गये और ग्राडपर पेरिस से 30 कि.मी. दूर जाकर उतरे।

वैज्ञानिक चार्ल्स की जान का खतरा उसके द्वारा उड़ाये गये गुब्बारे की घटना के कारण टल गया था। वास्तव में चार्ल्स राजा के यहाँ नौकरी करता था। राजा को दुश्मनों ने जेल में डाल दिया, इसलिए चार्ल्स को भी पकड़ लिया गया था। राजा को मौत की सजा सुना दी थी, लेकिन चार्ल्स ने गुब्बारे वाली बात बतलायी तो कुछ लोगों ने उन्हें पहचान लिया और उनको बचा लिया गया।

फ्रांस के दो वैज्ञानिक 1804 में अनेक वैज्ञानिक यंत्रों के साथ एक गुब्बारे में उड़े। वे यह जानना चाहते थे कि क्या चुंबकीय सुई काफी ऊंचाई पर भी वैसा ही व्यवहार करती है, जैसे पृथ्वी पर करती है। इस उड़ान में एक घटना घटी, जिससे एक गडरिया लड़की को लगा कि यह कोई चमत्कार है। गुब्बारा 2100 मीटर की ऊंचाई तक उड़ा।

बहरहाल समय बीतता गया। सन् 1878 में पेरिस में हेनरी गिफर्ड ने एक ऐसा गुब्बारा बनाया, जिसमें वह सवारी भी बिठा सकता था। धीरे–धीरे गुब्बारे बड़े लोगों के सम्मान में भी छोड़े जाने लगे।

आज गुब्बारों का उपयोग प्रचार माध्यम के रूप में भी किया जाता है। गुब्बारे पर विज्ञापन छापकर उसको हवा में छोड़ दिया जाता है।

प्रेरक प्रसंग : दिनेश राय

सजग महात्मा

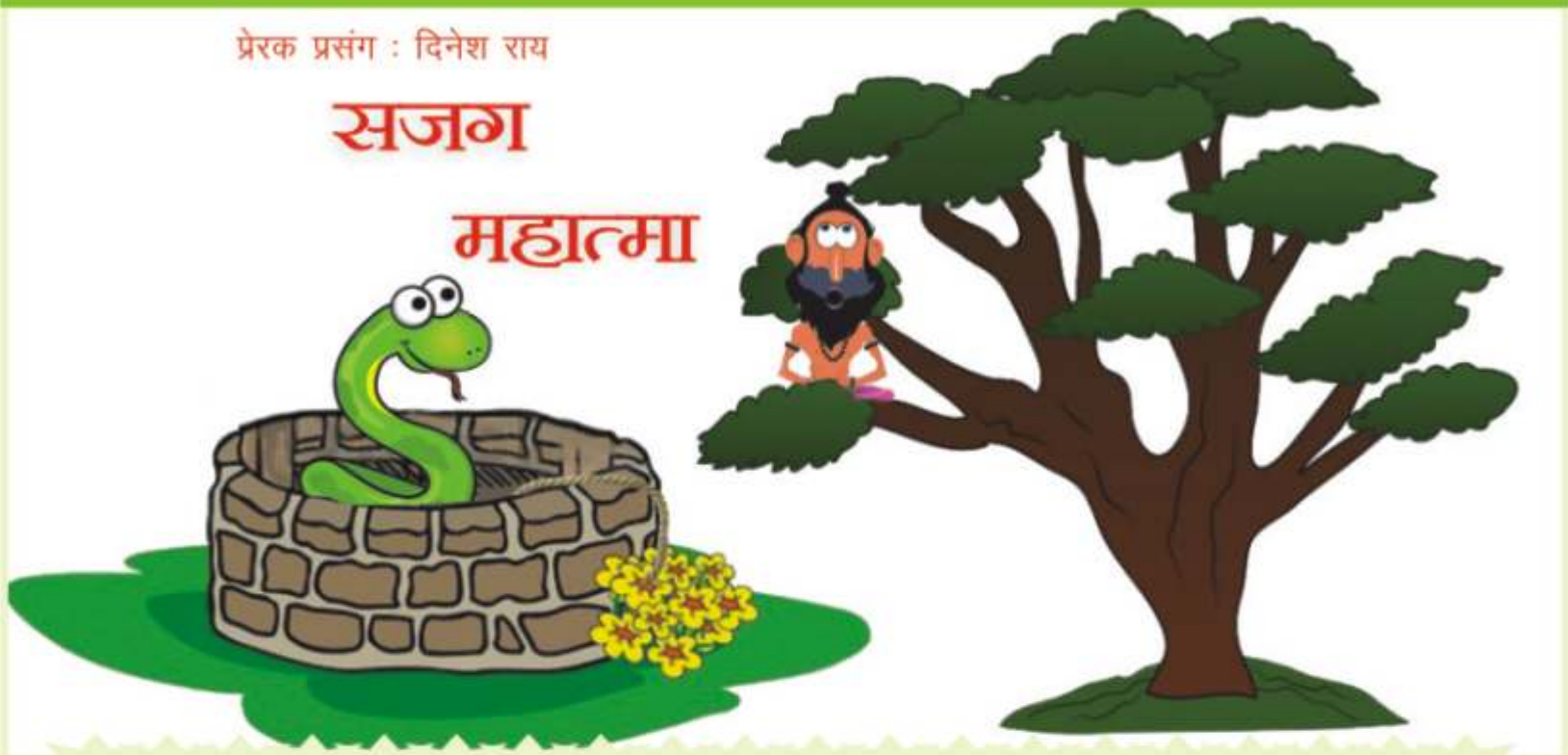

एक बार की बात है। एक महात्मा जंगल से गुजर रहे थे। महात्मा ने देखा कि एक सर्प और एक नेवला आपस में लड़ रहे हैं। सर्प खून से लथ–पथ हो चुका था। महात्मा को सर्प पर दया आ गई। महात्मा कुछ सोचते हुए उनकी ओर बढ़े तभी नेवले ने महात्मा को देख लिया और सर्प को छोड़कर भाग गया। सर्प काफी क्रोध में था। वह सामने खड़े महात्मा को काटने के लिए झपटा। तब महात्मा ने किसी प्रकार से भाग कर अपनी जान बचायी।

कुछ दिन बाद महात्मा फिर उसी जंगल से गुजर रहे थे। उनको जोर की प्यास लगी थी। वह जंगल में एक कुएं के पास गये। उन्होंने देखा कुछ चरवाहे कुएं में पत्थर के टुकड़ों से किसी चीज को मार रहे थे। जब पास जाकर उन्होंने देखा कि वही सर्प कुएँ में गिरा पड़ा है। वह पत्थर के टुकड़ों से मार खाकर लहू–लुहान हो चुका था। कुएँ में फिसलन होने की वजह से वह कुएं के बाहर भी नहीं आ पा रहा था।

सर्प ने महात्मा से कहा– कृपया मुझे बाहर निकालो नहीं तो ये बच्चे मुझे मार डालेंगे अथवा मैं पानी में डूब कर मर जाऊँगा। महात्मा को सर्प पर दया आ गई। महात्मा ने डोरी से कमण्डल बाँधा और कुएं में लटका दिया। सर्प बड़ी सरलता से उस कमण्डल में बैठ गया। महात्मा ने जैसे ही उसे बाहर निकाला सर्प ने कहा– महात्मा मुझे एक सपेरा पकड़ रहा था

प्रेरक प्रसंग : दिनेश राय

सजग महात्मा

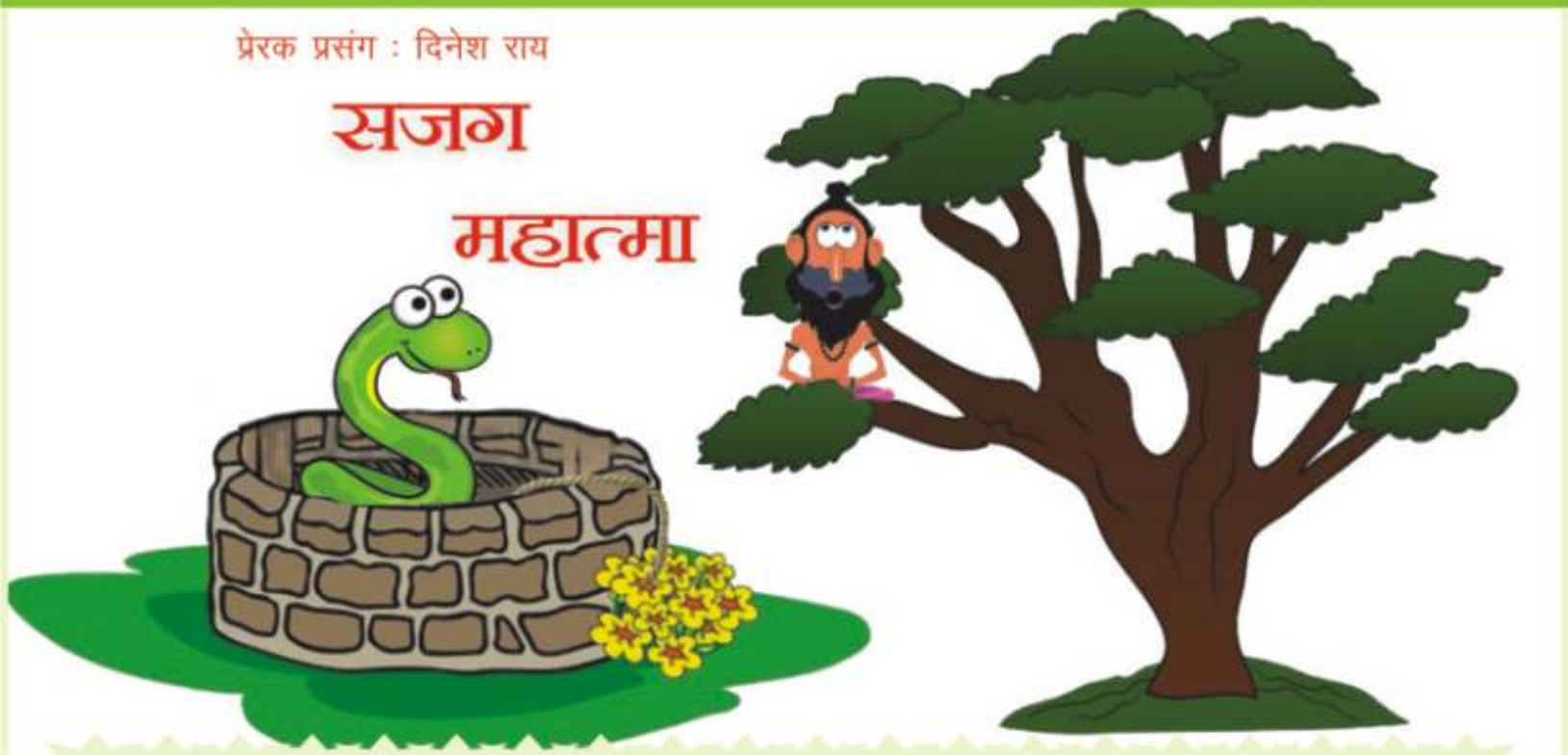

एक बार की बात है। एक महात्मा जंगल से गुजर रहे थे। महात्मा ने देखा कि एक सर्प और एक नेवला आपस में लड़ रहे हैं। सर्प खून से लथ–पथ हो चुका था। महात्मा को सर्प पर दया आ गई। महात्मा कुछ सोचते हुए उनकी ओर बढ़े तभी नेवले ने महात्मा को देख लिया और सर्प को छोड़कर भाग गया। सर्प काफी क्रोध में था। वह सामने खड़े महात्मा को काटने के लिए झपटा। तब महात्मा ने किसी प्रकार से भाग कर अपनी जान बचायी।

कुछ दिन बाद महात्मा फिर उसी जंगल से गुजर रहे थे। उनको जोर की प्यास लगी थी। वह जंगल में एक कुएं के पास गये। उन्होंने देखा कुछ चरवाहे कुएं में पत्थर के टुकड़ों से किसी चीज को मार रहे थे। जब पास जाकर उन्होंने देखा कि वही सर्प कुएँ में गिरा पड़ा है। वह पत्थर के टुकड़ों से मार खाकर लहू–लुहान हो चुका था। कुएँ में फिसलन होने की वजह से वह कुएं के बाहर भी नहीं आ पा रहा था।

सर्प ने महात्मा से कहा– कृपया मुझे बाहर निकालो नहीं तो ये बच्चे मुझे मार डालेंगे अथवा मैं पानी में डूब कर मर जाऊँगा। महात्मा को सर्प पर दया आ गई। महात्मा ने डोरी से कमण्डल बाँधा और कुएं में लटका दिया। सर्प बड़ी सरलता से उस कमण्डल में बैठ गया। महात्मा ने जैसे ही उसे बाहर निकाला सर्प ने कहा– महात्मा मुझे एक सपेरा पकड़ रहा था

और मैं भागता हुआ इस कुएँ में गिर पड़ा। जिन्होंने मुझे घायल किया वे भी इन्सान थे। इसलिए अब मेरी दुश्मनी सभी इन्सानों से है और तुम भी एक इन्सान हो, इसलिए अब मैं तुमको काटूँगा। सर्प ने महात्मा के पैर को लपेट लिया। इससे पहले कि वह काटता महात्मा ने तेजी से अपना पैर झटक दिया और सर्प पुनः कुएं में जा गिरा।

सर्प ने पुनः बाहर निकालने के लिए विनती की तो महात्मा ने कहा– तुम कृपा के पात्र नहीं हो, मैं तुम्हारी सहायता करके देख चुका हूँ। अब तुम चाहे जीयो या मरो; मैं तो चला। अभी महात्मा कुछ ही दूर गये थे कि उनके मन ने उन्हें सर्प की सहायता करने के लिए रोक लिया।

महात्मा कुएँ के पास जाकर सर्प से बोले– हे सर्प मैं कुएं में अपनी डोरी और कमण्डल लटका देता हूँ और तुम उसे पकड़कर बाहर निकल आना। मैं तुम्हें स्वयं बाहर नहीं निकालूँगा। जब तक तुम बाहर निकलोगे मैं काफी दूर जा चुका होऊँगा। मरता क्या न करता। सर्प धीरे–धीरे रस्सी के सहारे ऊपर चढ़ने लगा। महात्मा एक पेड़ पर चढ़ गये। वह छिपकर सारा नज़ारा देखने लगे। कुछ ही देर में सर्प बाहर निकला। वह काफी क्रोध में दिख रहा था। उसने अपना फन उठाकर चारों तरफ देखा। मानों किसी को ढूँढ रहा हो। कुछ देर बाद जब सर्प चला गया तब महात्मा नीचे उतरे और अपना कमण्डल साफ करके पानी पिया और अपनी मंजिल की तरफ चल पड़े।

– दुष्ट की संगति से दूर रहें। उनकी सहायता करने से पहले अपने बचाव पर भी विचार अवश्य करें।

आओ तुम्हें बताएं
बादल काले क्यूं होते हैं?

बच्चों, बरसात के मौसम में आसमान में काले–काले बादल छाये रहते हैं। सूरज की किरणें धरती पर बहुत कम पहुँच पाती है। ऐसा क्यों होता है? इसे तुम इस प्रकार भी समझ सकते हो कि जब प्रकाश की किरणें किसी भी वस्तु पर गिरती है तो वह वस्तु प्रकाश की कुछ किरणों को परावर्तित कर देती हैं तथा शेष को अवशोषित कर लेती हैं। यदि वस्तु चमकीली है तो किरणें ज्यादा परावर्तित होगी और यदि वस्तु काली है तो किरणें अवशोषित ज्यादा होगी। यही नियम बरसाती बादलों पर भी लागू होता है। इन बरसाती बादलों में पानी की असंख्य बूंदे सूरज की अधिक से अधिक किरणें अवशोषित कर लेती हैं। इससे पृथ्वी पर बहुत ही कम किरणें पहुँच पाती है तथा बादल हमें काले दिखाई देते हैं।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर **'या'** अक्षर पर खत्म होते हैं। पैन या पेन्सिल उठाइए और प्रश्न चिन्ह के बाद उत्तर लिखते जाइए।

प्रश्न 1. संसार के सबसे बड़े महाद्वीप का क्या नाम है? ... या

प्रश्न 2. इरान देश का पुराना नाम क्या था? ... या

प्रश्न 3. असम राज्य में बोली जाने वाली मुख्य भाषा कौन सी है? ... या

प्रश्न 4. ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने किस महिला के पतिव्रत धर्म की परीक्षा ली थी? ... या

प्रश्न 5. भगवान श्रीकृष्ण ने यमुना में विद्यमान किस नाग को मार कर गोकुलवासियों की रक्षा की थी? ...या

प्रश्न 6. एशिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान गोबी रेगिस्तान किस देश में स्थित है? ... या

प्रश्न 7. नेत्रदान में दाता की आँख का कौन सा भाग उपयोग में लाया जाता है? ... या

प्रश्न 8. संसार का सबसे बड़ा द्वीप समूह वाला देश कौन सा है? ... या

प्रश्न 9. ऑस्कर पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली भारतीय महिला कौन थी?. ... या

प्रश्न 10. किस देश को 'कंगारुओं का देश' कहा जाता है? ... या

प्रश्न 11. महात्मा बुद्ध की माता का क्या नाम था? ...या

प्रश्न 12. यूरोप महाद्वीप में स्थित किस देश की राजधानी तिराना है? ... या

प्रश्न 13. जनसंख्या के अनुसार अफ्रीका महाद्वीप का सबसे बड़ा देश कौन सा है? ... या

प्रश्न 14. भारत की मुद्रा कौन सी है? ... या

प्रश्न 15. भगवान श्रीराम का जन्म कहाँ हुआ था? ... या

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. एशिया, 2. पर्शिया 3. असमिया 4. अनुसूया की 5. कालिया को 6. मंगोलिया में 7. कॉर्निया 8. इंडोनेशिया 9. मानु अथैया 10. ऑस्ट्रेलिया को 11. महामाया 12. अल्बानिया की 13. नाइजीरिया 14. रुपया 15. अयोध्या में

स्वास्थ्य (सेहत) : परिधि जैन

गुणों से भरपूर : मूंग और मूंग की दाल

दालों में मांस से भी अधिक पौष्टिक तत्व होते हैं। मांस की तुलना में दालें सस्ती भी बहुत अधिक होती हैं। दालों को एक तरह से प्रोटीन का खजाना कहा जाता है।

दालों में मूंग की दाल इसलिए उत्तम है क्योंकि यह पथ्य भी है। चाहे स्वस्थ व्यक्ति खाए अथवा मरीज, दोनों के लिए यह बराबर लाभदायक है। धनवंतरीनिघंटु में मूंग की दाल को 'सूपश्रेष्ठाः' कहा गया है। जिस तरह किसी भी धुली हुई दाल की जगह छिलकेदार दाल खाना ज्यादा फायदेमंद है, उसी प्रकार मूंग की दाल की तुलना में साबूत मूंग भी अधिक पौष्टिक होती है।

मूंग ठंडी, हल्की, स्वादिष्ट, अग्निदीपक, कफ–पित्त के विकारों को शान्त करने वाली, ज्वरनाशक तथा आंखों के लिए हितकारी है, लेकिन थोड़ी–सी वातकारक जरूर होती है। कुछ लोगों का भ्रम है कि दाल खाने से पेट में वायु भर जाती है। यह भ्रम निराधार है। मूंग तो इतनी गुणकारी है कि प्रायः मरीजों को मूंग की दाल और फुलका तथा मूंग की खिचड़ी खाने की सलाह दी जाती है।

गाढ़ी मूंग की दाल के साथ रोटी का और पतली दाल के साथ चावल का मेल अच्छा बैठता है। जिस प्रकार बड़ियां बनती हैं, उसी तरह कई अंचलों में मूंग की दाल की छोटी–छोटी मंगोड़ियां भी बनाई जाती हैं। यदि कभी खाने के बाद दाल बच जाए तो दूसरी बार के खाने में उसी दाल के परांठे भी बनाये जा सकते हैं मूंग के लड्डू तो बलवर्द्धक भी होते हैं। लड्डू बनाने के लिए मूंग के आटे को घी में भून लिया जाता है। इस भुनाई के बीच थोड़ा–थोड़ा दूध भी डालते रहना चाहिए। जब दाना पड़ने लगे तो कढ़ाई उतार दी जाती है। उसके बाद मिश्री तथा चीनी मिलाकर इस ठंडे मिश्रण के लड्डू बना लिए जाते हैं। एक–एक लड्डू सुबह–शाम दूध के साथ खाना चाहिए।

मूंग को दूध में पीसकर उबटन करने से शरीर और विशेषकर चेहरे का सौन्दर्य निखरता है। इस उबटन से चर्म रोगों से भी छुटकारा मिलता है। इसी मूंग का गाढ़ा लेप जले हुए अंगों पर लगाने से शीघ्र आराम मिलता है।

मंदाग्नि में मूंग का पापड़ खाना बहुत अधिक फायदेमंद है। इसी तरह अतिसार, उल्टी, बुखार और अधिक पसीना आने वाली बीमारी में मूंग औषधि का काम देती है।

प्रति 100 ग्राम साबुत मूंग में 24 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 56.7 ग्राम कार्बोहाइड्रेट और 334 कैलोरी ऊर्जा होती है।

प्रेरक– प्रसंग : किशोर डैनियल

दो सहेलियां

किसी जंगल में एक चींटी अपने झूंड के साथ रहती थी। एक बार की बात है, वह भोजन सामग्री लेने अपने बिल से आगे ही निकली थी कि एक दूसरे समूह की चीटियां आपस में मिल गई। दोनों में एक दूसरी के रहने का स्थान पूछा।

पहली ने कहा– मैं तो नमक के पहाड़ पर रहती हूँ।

दूसरी ने कहा– मैं मिश्री के पहाड़ पर रहती हूँ।

पहली– मिश्री कैसी होती है?

दूसरी– मीठी और नमक कैसा होता है?

पहली– खारा।

दूसरी– तब तो तुम कभी मेरे घर आओ, मैं तुम्हारा मुँह मीठा कर दूंगी।

पहली– कभी अवसर हुआ तो देखा जायेगा।

अब तो वे रोज एक स्थान पर मिलने लगीं। एक दिन नमक के पहाड़ पर रहने वाली चींटी मिश्री के पहाड़ पर गई। पर वहाँ जाकर वह बोली–'अरी! तुम तो कहती थी। मिश्री मीठी होती है। पर मुझे तो खारी लग रही है। मिश्री के पहाड़ पर रहने वाली चींटी यह सुनकर बड़ी हैरान हुई। उसने आप को फिर से संभाला। पर वह तो निःसंदेह मिश्री के पहाड़ पर खड़ी थी। उसने उस पहाड़ को पुनः चखा, उसे वह सदा की भांति मीठा लगा। आखिर कारण खोजते–खोजते उसे पता लगा कि नमक के पहाड़ पर रहने वाली चींटी ने अपने मुह में एक नमक का टुकड़ा ले रखा है। उसने कहा– अरी बहिन! तुम्हारे मुँह में तो नमक पड़ा है। तुम मिश्री का स्वाद कैसे चख सकती हो? उसने तुरन्त वह नमक का टुकड़ा गिरा दिया, अब तो उसे मिश्री मीठी लगने लगी।

इसी प्रकार जो व्यक्ति अपने पुरानी आदतों और कर्मों को नहीं छोड़ता, वह दूसरों के द्वारा बताए हुए सत्य को भी नहीं देख पाता है।

◆ ◆ ◆

→

100 ग्राम मूंग की दाल में प्रोटीन की मात्रा 24.5 ग्राम, वसा 1.2 ग्राम, कार्बोहाइड्रेट 59.9 ग्राम तथा ऊर्जा की मात्रा 348 कैलोरी होती है।

इसके अतिरिक्त मूंग की दाल में पर्याप्त विटामिन भी पाए जाते हैं। अक्सर ग्रामीण और पुराने विचारों के लोग रोगों में लंघन (उपवास) करा देते हैं। किसी भी रोग में और विशेष रूप से बुखार में तो रोगी को अधिक खाना खिलाना चाहिए, उसमें भी मुख्यतः मूंग की दाल और मूंग की खिचड़ी ही हो। यूं भी दालें खाने की आदत डालनी चाहिए क्योंकि शाकाहारी और मांसाहारी, दोनों ही प्रकार के लोगों के भोजन में दाल सम्मिलित किया जाना अनिवार्य है।

◆ ◆ ◆

कविता : श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

मेरी बगिया में

शाम, सबेरे कोयल गाती मेरी बगिया में।
मीठे–मीठे गीत सुनाती मेरी बगिया में।।

भौरें गुन–गुन राग छेड़ते, फूलों पर मंडराते,
तितली कोमल पंख हिलाती मेरी बगिया में।।

फूल डोलते पंख खोलते महक–महक इतराते,
कलियां भी हैं गंध लुटातीं मेरी बगिया में।।

गेंदा और गुलाब महकते टेसू रंग दिखाते,
चम्पा, जूही और चमेली मेरी बगिया में।।

रोज चहकते पंछी प्यारे चिहुंक–चिहुंक कुछ कहते,
फुदक–फुदक चिड़िया इठलाती मेरी बगिया में।।

नीबू जामुन आम, संतरा, पके हुए अमरुद,
कुतर–कुतर मैना है खाती मेरी बगिया में।।

पिंकी पप्पी लवली बवली, सोनी मोनी, गीता,
ये सब रोज टहलने आतीं मेरी बगिया में।।

भैया से पूछो

– रामशंकर (बिलासपुर)

प्रश्न : क्रोध को नियंत्रण में कैसे रखें?

उत्तर : 1. जहाँ क्रोध प्रारम्भ हुआ, उस स्थान को थोड़े समय के लिए त्याग दें।

2. चुपचाप आंखें बंद कर गहरी सांस लें।

3. एक कागज़ व पेन्सिल लें, क्रोध की अवस्था में हुए मन के भाव उस पर लिखना प्रारम्भ करें। जैसे ही मन के भाव कागज़ पर उड़ेल दिये गये तभी क्रोध शान्त हो जाता है।

प्रश्न : मन को शुद्ध रखने का तरीका क्या है?

उत्तर : प्रभु–परमात्मा का सुमिरण निरंतर होता रहे।

– गीतू खनेजा (कलानौर)

प्रश्न : अच्छी सफलता कैसे मिलती हैं?

उत्तर : एकाग्र होकर अपनी सम्पूर्ण योग्यता व सच्चे मन में निरंतर कर्म करने से सफलता सदा मिलती है।

– एकता (वडसा)

प्रश्न : कुछ बच्चे जिद्दी क्यों हो जाते हैं?

उत्तर : उनकी जिद्द पूरी करते रहने के कारण।

–दिनेश राय (आज़मगढ़)

प्रश्न : मन शक्तिशाली है या बुद्धि?

उत्तर : बुद्धि द्वारा ही मन को शक्तिशाली बनाया जाता है।

– महेन्द्र कुमार (अमरावती)

प्रश्न : कोई कर्म अच्छा है या बुरा। इसका पता कैसे लगाया जाए?

उत्तर : वैसे तो अच्छी नीयत से किया गया हर कर्म का फल अच्छा ही होता है परन्तु फिर भी इसका पता तो फल मिलने पर ही चलता है।

–जोतिश (देहरादून)

प्रश्न : सद्गुरु किसे कहते हैं?

उत्तर : जो परम–सत्य को जानता हो और दूसरों को परम–सत्य की जानकारी दे सकता हो।

–संजय कुमार (दिल्ली)

प्रश्न : मित्र व शत्रु की पहचान किस प्रकार करें?

उत्तर : जागरूक रहकर; क्योंकि चापलूसी करने वाले, झूठी तारीफ करने वाले तथा हमेशा छोटे–छोटे रास्ते बताने वाले लोग स्वार्थी होते हैं; उनसे बचना ही चाहिए।

–प्रवीण कुमार (दिल्ली)

प्रश्न : इन्सान आज महापुरुषों की विचारधारा से प्रभावित तो बहुत जल्दी हो जाता है। पर उस पर चल नहीं पाता है। अगर चलता भी है तो कुछ समय बाद भटक जाता है। ऐसा क्यों?

उत्तर : अच्छी चीज का असर बुरी के मुकाबले में थोड़ा धीरे–धीरे होता है इसलिए आदमी से ऐसी गलती हो जाती है।

प्रश्न : अगर स्वार्थी, ईर्ष्यालु और कपटी लोगों की संगति जीवन में मिले तो क्या करना चाहिए?

उत्तर : सजग रहकर उनसे किनारा कर लेना चाहिए।

– सुनीता खुराना (हिसार)

प्रश्न : दुनिया में ऐसी कौन–सी वस्तु है जिसका कर्ज कभी चुकाया नहीं जा सकता?

उत्तर : गुरू की कृपा, माता–पिता की ममता और पति–पत्नी का सहयोग।

प्रश्न : सत्पुरुषों और गुरुओं से हमें क्या सीखना चाहिए?

उत्तर : 'स्वयं' की जानकारी के बाद; निःस्वार्थ भाव से अपने द्वारा किये गये कर्मों के फल को याद कर उन्हें स्वयं निर्धारित कर लें तो अपनी गलतियों व सफलताओं का अहसास हो जाता है।

– भूपिन्दर बिट्टू (लहरागागा)

प्रश्न : सूरज, चाँद और सितारे हमें क्या संदेश देते हैं?

उत्तर : प्रकाश का लाभ उठाओ, उस पर अधिकार न जमाओ।

प्रश्न : इन्सान का मन कितना बलवान होता है?

उत्तर : जितनी उसकी चेतना जाग्रत होती है।

प्रश्न : मन को स्थिर कैसे किया जा सकता है?

उत्तर : 'सद्गुरु' को पहचान कर; उसके हुक्म को सम्पूर्णतौर पर मानकर उस पर चलने से मन स्थिर रहता है।

प्रश्न : जीवन में हमेशा सफलता मिले, इसके लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर : 'स्व' की जाग्रति व ठीक दिशा निर्धारित कर उस पर अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा के साथ चलते रहना चाहिए।

– दीपक जेस्वानी (हिंगनघाट)

प्रश्न : निराकार प्रभु हर पल हमारे साथ होता है, फिर भी हम इसे भूल क्यों जाते हैं?

उत्तर : हमारा शरीर माया (भौतिक तत्वों) व परम तत्व (आत्मा) का समन्वय है। इसलिए शरीर का माया से भ्रमित होना भी स्वाभाविक है परन्तु सुमिरण, सत्संग व सेवा के द्वारा मन भटकन से दूर हो सकता है।

बाल ग़ज़ल : अनिल द्विवेदी 'तपन'

आओ बादल

आओ बादल, आओ बादल।
अम्बर पर छा जाओ बादल।।

कड़क–कड़क कर, गरज–गरज कर।
अपना राग सुनाओ बादल।।

दिन को रात बनाने वाले
जादू को दिखलाओ बादल।।

मेंढक, मोर, पपीहा टेरें
उन पर दया दिखाओ बादल।।

दहक रही गर्मी से धरती
आकर तपिश मिटाओ बादल।।

पोखर, ताल, तलैया सूखीं।
इनको भी भर जाओ बादल।।

शिशु गीत : राधेलाल 'नवचक्र'

मीठे अनार

अनार का जब
आया मौसम
चीकू पड़ा बीमार।
सोचा खूब मिलेंगे खाने
ताजे मीठे अनार।।

चिंकी और सी-हौर्स
-पंकज राय
चिंकी की तान्या दीदी जीव विज्ञान की टीचर थी।
तान्या दीदी, मुझे कोई मजेदार जीव के बारे में बताओ ना।
तो सुनो चिंकी आज मैं तुम्हें सी–हौर्स के बारे में बतलाती हूँ। सी–हौर्स को हिन्दी में समुद्री घोड़ा कहा जाता है।
सी–हौर्स एक प्रकार की हड्डियों वाली मछली है। इसकी लम्बाई 10 सेमी. से लेकर 30 सेमी. तक होती है। संसार में इसकी 100 से भी अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
घोड़े की तरह सिर की बनावट होने के कारण इसे सी–हौर्स कहा जाता है। यह मछली दुनिया के कई समुद्रों में पायी जाती है।
यह सीधी खड़ी अवस्था में ही तैरती है। सी–हौर्स की तैरने की गति बहुत धीमी होती है। सिर्फ एक किलोमीटर तैरने में इसे दो से तीन दिन लग जाते हैं।

सी–हौर्स में और क्या खासियत होती है? क्या सी–हौर्स रंगीन मछली है?
सी–हौर्स की पूँछ अन्य मछलियों से अलग सांप की तरह दिखती है।
सी–हौर्स कई रंगों में पाई जाती है जैसे लाल, पीला, नीला, सफेद आदि। सी–हौर्स मुख्यतः समुद्र में तैरते सूक्ष्म जीवों को खाती है। यह समुद्री घासों के बीच छिप कर रहना भी पसन्द करती है।
पर चीन, जापान जैसे देशों में दवाईयाँ बनाने के नाम पर लाखों की संख्या में इन्हें मार डाला जाता है। इस वजह से इनकी जनसंख्या लगातार घट रही है।
मजेदार बात यह है कि सी–हौर्स खाने में स्वादिष्ट नहीं होती है। अतः बड़े–बड़े समुद्री जीवों से इन्हें कोई खतरा नहीं रहता है।
धन्यवाद तान्या दीदी। आज आपने मुझे बहुत अच्छी जानकारी दी।

बाल कविता :
डॉ. रामनिवास 'मानव'

आई वर्षा

बाद बहुत दिन आई वर्षा।
देख सभी का मन था हर्षा।

बादल गरजा, बिजली कड़की।
अम्बर में ज्वाला–सी भड़की।

फिर तो इतना बरसा पानी,
याद सभी को आई नानी।

भीतर पानी, बाहर पानी।
पानी में घर, घर में पानी।

छोटे–बड़े सभी घबराये।
अब क्या होगा, समझ न पाये।

रूकी एकाएक फिर वर्षा।
देख इन्द्रधनुष, मन हर्षा।

बाल कविता : डॉ. हरीश निगम

बादल आये

नभ में छाए,
काले नीले
सूखे गीले
बादल आए।

ढोल बजाएं,
फोटो खींचे
धरती सींचें
धूल भगाएं।

मोटे भैंसे,
बादल भइया
कुत्ता–गइया
बनते कैसे?

पानी लाते,
कब आएंगे
कब जाएंगे
नहीं बताते।

पढ़ो और हँसो

एक सीधा–सादा देहाती रेलवे स्टेशन की टिकट खिड़की पर जाकर क्लर्क से बोला – एक टिकट दीनदयाल का देना।

टिकट क्लर्क बड़ी देर तक स्टेशनों के नामों की सूची खोल कर देखते हुए परेशान होकर बोला– अरे, यह है कहाँ?

देहाती बोला– बाबू जी, वह बाहर बेंच पर बैठा है।

★ ★ ★

टीचर : मीना! 1656 में कौन–सी ऐतिहासिक घटना हुई थी?

मीना : सर, एक बार आप बता दीजिए।

टीचर : आगरा का ताजमहल बनकर तैयार हो गया था।
अच्छा अब बताओ 1756 में कौन–सी ऐतिहासिक घटना हुई थी?

मीना : (तुरंत), सर! ताजमहल को बने 100 साल हो गये थे।

★ ★ ★

एक आदमी : (अपने मित्र से)। तुमने अपनी छुट्टियां कैसे बिताई?

मित्र : एक दिन घुड़सवारी में और बाकी दिन अस्पताल में।

★ ★ ★

डॉक्टर : (मरीज से) मैंने तुम्हें याददाश्त ठीक करने की दवाई दी थी। कुछ फर्क पड़ा।

मरीज : जी, अभी तक तो कोई फर्क नहीं पड़ा। मैं रोज दवाई लेना भूल जाता हूँ।

★ ★ ★

एक पड़ोसी : (दूसरे पड़ोसी से) 'तीन बुलाओ और तेरह आ जाए' तो क्या किया जाए?

दूसरा पड़ोसी : फौरन 'नौ दो ग्यारह' जो जाने में ही भलाई है।

★ ★ ★

अनुज : भैया! 'आई डोंट नो' क्या अर्थ है?

अग्रज : 'मैं नहीं जानता।'

अनुज : आप नहीं जानते तो आपने अंग्रेजी में एम.ए. कैसे कर लिया?

★ ★ ★

माँ : बेटे, जरा देखना तो दूध उबलकर बाहर तो नहीं आ रहा?

बेटा : माँ आप चिन्ता ना करो मैंने रसोईघर के दरवाजे बन्द करके कुण्डी लगा दी है।

पति : (पत्नी से) सुबह–सुबह कहाँ जा रही हो?

पत्नी : पड़ोसन से झगड़ा करने।

पति : कल तो झगड़ा करके आई थी।

पत्नी : कल 'सेमी फाइनल' था आज 'फाइनल' है।

★ ★ ★

पिता : बेटे, तुम इतिहास में फेल क्यों हुए?

बेटा : क्या करता पिताजी! सभी प्रश्न उस समय के थे जब मैं पैदा ही नहीं हुआ था।

– प्रतीक्षा कुशवाला (इटावा)

★ ★ ★

ग्राहक : आम क्या भाव है?

फलवाला : सौ रुपया किलो। खरीदने हैं क्या?

ग्राहक : खरीदने नहीं सिर्फ संघूने हैं।

★ ★ ★

बेटा : पापा, गुलाब का पौधा लगाए एक हफ्ता हो गया है पर अभी तक उसकी जड़ें नहीं निकली।

पिता : लेकिन बेटे, तुम कैसे जानते हो?

बेटा : क्योंकि मैं रोज उसे उखाड़कर देखता हूँ।

★ ★ ★

एक फौजी अफसर ने अपने जवानों को खाने पर बुलाया। जब खाना परोसा गया तो अफसर बोला– जवानों खाने पर ऐसे टूट पड़ो जैसे दुश्मन पर टूट पड़ते हो।

एक जवान जल्दी–जल्दी खाना खाकर बाकी खाना अपने कोट की जेबों में ठूंसने लगा।

अफसर ने झिड़क कर कहा – यह क्या कर रहे हो?

जवान बोला – सर जो दुश्मन मारे नहीं जा सके, उनको कैदी बना रहा हूँ।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

★ ★ ★

लड़की का पिता : (गुस्से में) तुम्हारी इतनी हिमम्त तुम मेरी बेटी से विवाह करना चाहते हो, खुद को कभी शीशे में देखा है, तुम उसके एक टाईम के नाश्ते का बिल भी नहीं चुका सकते।

लड़का : क्या वह इतना ज्यादा खाती है। फिर तो रहने ही दें।

–रामखेलावन (दिल्ली)

मई अंक रंग भरो परिणाम

प्रथम :	अक्षय कुमार 1195, सेक्टर –46 बी चण्डीगढ़	आयु 14 वर्ष
द्वितीय :	गौरव कुमार निरंकारी निवास, पांचूपुर, जिला : समस्तीपुर (बिहार)	आयु14 वर्ष
तृतीय :	गर्वी म.नं. 5, गली नं. 7 निरंकारी कालोनी, दिल्ली	आयु 12 वर्ष

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

मुनिता कुमारी (पांचूपुर), चेतना निरंकारी (कच्चेड़ा), अक्षय कुमार (चम्बोह), परी कुमारी (रामपुर), रवि कुमार (खुई खेड़ा), जसप्रीत कौर (बी.आर.एस.नगर, लुधियाना), शिवांगी (फतेहगढ़ सहिब), खुशबू बंसल (हनुमानगढ़), संतोष (पंचकूला), आस्था अरोड़ा (बड़ौदा मेव), अनन्त शाक्या (महावीर नगर, भरथना), अंकिता प्रजापति (मलिकपुर), आभीष (भाटिण्डा), नव्या अरोड़ा (आगरा), सीमा (चण्डीगढ़), अंकिता राय, (दिल्ली), जोतिष, (देहरादून)।

जुलाई अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर 15 जुलाई तक सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के सितम्बर अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें। इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका भारत व नेपाल के लिए वार्षिक शुल्क 150/–रुपये एवं पाँच वर्ष के लिए 700/– रुपये है। तथा विदेशों के लिए शुल्क की दरें पृष्ठ एक पर देंखे।

यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चैक या नेट बैंकिंग द्वारा अपने मोबाइल नं. सहित निम्न पते पर भेजें–

पत्रिका विभाग (हँसती दुनिया)
सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009

नोट: चैक/ड्राफ्ट केवल सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- नेट बैंकिंग की डिटेल HDFC Bank A/c No. 50100050531133 NEFT/RTGS IPSC Code— HDFC 0000651 है। इसमें आप नगद अथवा चैक/ड्राफ्ट आदि भी जमा करा सकते हैं।
- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ–साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें। यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।
- पत्रिका से सम्बन्धित कोई भी शिकायत या जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप 011–47660360 पर फोन कर के या E-mail: patrika@nirankari.org द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

खुल गये स्कूल

चलो हो गई खत्म छुट्टियां
फिर से थामों कलम–कापियां।

ढूंढो बस्ते और किताबें
कहीं हैं जूते कहीं जुराबें।

कहाँ रखी है युनिफार्म
बजा रही है घड़ी अलार्म।

वही होमवर्क वही पढ़ाई
खुल गये स्कूल करो पढ़ाई।

नहीं चलेगा कोई बहाना
स्कूल रोज पड़ेगा जाना।

आलेख : किरण बाला

धूप से पेड़ों की पत्तियां गर्म क्यों नहीं होती?

कल्पना कीजिए, मई जून की दोपहर को जब सूर्य अपने प्रचंड वेग पर होता है। इसकी तपन से धूप में रखी हर चीज गर्म हो जाती है, फिर चाहे वह कागज हो या कपड़ा, लोहा हो या तांबा, लेकिन सारे दिन धूप में रहने के बाद भी पेड़ों की पत्तियां गर्म नहीं होती,

दरअसल, पेड़ों की पत्तियां कोशिकाओं की अनेक परतों से मिलकर बनी होती हैं। नीचे की त्वचा में अनेक छोटे–छोटे छेद होते हैं जो कि वाल्ब की तरह काम करते हैं यानी जब ये खुले होते हैं तो कार्बनडाइआक्साइड पत्ती के भीतर प्रवेश करती है। इन्हीं छिद्रों से पत्ती के भीतर की आक्सीजन तथा जलवाष्प बाहर निकल जाती है। लेकिन जब ये छेद बंद होते हैं, तो न तो कोई गैस भीतर जा सकती है न बाहर आ सकती है। आमतौर पर ये छेद दिन में खुले रहते हैं और रात को बंद रहते हैं। इन छेदों से जलवाष्प बाहर निकलती रहती है। इसकी पूर्ति जड़ों द्वारा होती रहती है। इसे वाष्पोत्सर्जन क्रिया कहते हैं। इसी के कारण धूप में भी पेड़ों की पत्तियां ठंडी बनी रहती हैं। वाष्पन क्रिया से उत्पन्न ठंडक की वजह से सूर्य की रोशनी से वे गर्म नहीं होती।

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

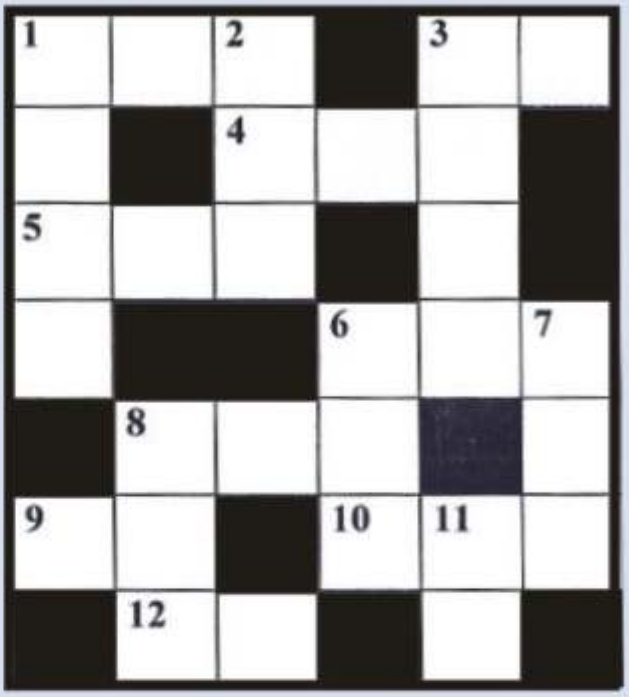

बाएं से दाएं →

1. भटिंडा और सिरसा में से जो शहर हरियाणा राज्य में है।
3. ऊर्जा का मात्रक : (जूल / किलो)
4. आस्ट्रिया देश की राजधानी।
5. .....मंत्र की शुरूआत 'ओम भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्' से होती है।
6. शुद्ध शब्द छांटिएं : बड़ई / बढ़ई।
8. राज्यसभा में जितने सदस्यों को राष्ट्रपति मनोनीत करते हैं।
9. भीम का प्रिय अस्त्र।
10. सन्त निरंकारी मण्डल एक पाक्षिक पत्र प्रकाशित करता है, जिसका नाम है : 'एक ....।'
12. जिस महीने की एक तारीख को मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाता है।

ऊपर से नीचे ↓

1. इस पंक्ति में छुपे पारसियों के पूजा स्थल का नाम ढूंढिए : हुलसि ने गागर में पानी भर लिया है।
2. जो अपने पति सत्यवान को यमराज से छुड़ा कर लाई थी।
3. जूनागढ़ और वाराणसी में से जो शहर गुजरात में है।
6. आपकी मम्मी की सास की इकलौती पोती आपके भाई की क्या लगती है?
7. सूली पर चढ़ा देने के बाद ईसा मसीह जी के पुनः जीवित होने से सम्बन्धित जो त्यौहार मनाया जाता है।
8. एक सूखा मेवा जिसे खाने से दिमाग तेज होता है।
11. भारत के सिर्फ चार राज्यों की सीमा पाकिस्तान को छूती है: पंजाब, राजस्थान, गुजरात और .... कश्मीर।

(वर्ग पहली के उत्तरी इसी अंक में हैं)

आपके पत्र मिले

मैं पिछले एक वर्ष से हँसती दुनिया का सदस्य हूँ। हर महीने मुझे इसका बेसब्री से इंतजार रहता है। इतनी कम कीमत में ऐसी पत्रिका मिलता असंभव है। इसकी छपाई भी साफ और स्पष्ट तथा पन्ने भी अच्छे होते हैं।

मार्च का अंक पढ़ा। इस अंक की सारी कहानियां अच्छी और प्रेरक थीं। 'पढ़ों और हँसो' ने मुझे खूब गुदगुदाया।

'भैया से पूछो' में उत्तर शिक्षाप्रद होते हैं। इसे पढ़कर अधिक जानकारी बढ़ाने की जिज्ञासा होती है। कहानियों में 'कर्म की महानता', 'परिश्रम के स्वेद बिन्दू', 'सेवा भाव' शिक्षाप्रद लगीं तथा प्रेरक प्रसंग भी अच्छे लगे।

– विष्णुदेव मण्डल (गनौली)

मैं हँसती दुनिया का सदस्य हूँ। हमें हँसती दुनिया का बेसब्री से इंतजार रहता है। हँसती दुनिया को मैं खुद भी पढ़ती हूँ तथा अपने मित्रों को भी पढ़वाती हूँ। इसमें कहानियां तथा प्रेरक–प्रसंग शिक्षाप्रद होते हैं।

मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि ये पत्रिका दिन–दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करे।

– शालू राय (घड़सी)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। यह पत्रिका शिक्षाप्रद तथा बुद्धिवर्द्धक है। इसमें 'भैया से पूछो' में से कई सवालों के जवाब मिल जाते हैं। अप्रैल अंक में 'सच्चा सुख', 'अक्ल आ गई' तथा 'बेईमानी का फल' कहानियां शिक्षाप्रद लगीं।

– पायल (राजकोट)

अप्रैल अंक में सामयिक कविताएं, सुन्दर कहानियां, स्तम्भ और चित्रकथाएं भी मोहक हैं। बच्चों के लिए चित्र रंगीन सुहावने हैं। 'वर्ग पहेली,' 'पढ़ो और हँसो' एवं अपनी राय व्यक्त करने हेतु पत्र–स्तम्भ भी। यह सम्पूर्ण पत्रिका है।

– सचिन शंकर (अलीबाग)

मैं हँसती दुनिया का सदस्य हूँ। इस पत्रिका में प्रकाशित कहानियां, कविताएं, लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरक होते हैं। हर तरह की जानकारियों से भरपूर एवं शंका के समाधान हेतु 'भैया से पूछो', कभी न भूलो, गुदगुदाने वाले चुटकले, 'क्या आप जानते हैं?' एवं विकास अरोड़ा द्वारा प्रस्तुत 'सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी' के अतिरिक्त और भी भरपूर सामग्री होती है। जो हम बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक होती हैं।

– प्रतीय राजपूत (मैनपुरी)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 सि	र	2 सा		3 जू	ल
ने		4 वि	य	ना	
5 गा	य	त्री		ग	
ग			6 ब	ढ़	7 ई
	8 बा	र	ह		स्ट
9 ग	दा		10 न	11 ज	र
	12 म	ई		म्मू	

TU HI NIRANKAR

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SUPER AQUA®

R.O. System

WHITE GOLD®

AQUA FRESH

Reverse Osmosis

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

Wholesale & Retailer of all type of **Water Purifier, Water Dispenser, R.O. System & Commercial R.O System 100 to 500 Ltr.**

Free Gift (5Ltr. Cooker)

Free Gift (Juicer Mixer)

Free Gift (Toaster)

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

FREE DEMO WATER TESTING

आसान किस्तों पर उपलब्ध 0% FINANCE

for enquiry call Customer Care

09650573131

(Arvind Shukla)

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

SATGURU HOME APPLIANCES

(Call. 09910103767)

Head office. E-1/23, Ground Floor Sec-16, Rohini Nr. Jain Bharti Public School, Delhi-110085

Mumbai office. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex Nr. T.V Tower, Badlapur (East) Thane, Maharashtra,

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा, दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएँ।

MUBAI : Vorivali, Kurla, Dadar, Thane, Ulhas Nagar, Kalyan, Badlapur **MAHARASHTRA** : Pune, Aurangabad, Vansa, Nagpur, Buland, Kohlapur **SOUTH INDIA** : Hyderabad, Belgaum **UTTAR PRADESH** : Allahabad, Gorakhpur, Mathura, Agra, Kanpur, Jonpur, Lucknow, Azamgarh **UTTRAKHAND** : Dheradun, Haldwani, Rishikesh, Haridwar **PUNJAB** : Chandigarh, Hoshiarpur, Bhatinda, Patiala, Jalandhar, Ludhiana **BIHAR** : Patna, Samastipur, Darbhanga, Gaya, Bhagalpur **WEST BENGAL** : Kolkata, Sealldah **RAJASTHAN** : Jaipur, Jodhpur

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Experience the spiritual dreamland like never before

With the blessings of His Holiness Satguru Baba Hardev Singh Ji, we are happy to launch the new kids website with new exciting and fun features highlighting our mision's spiritual message.

visit kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)